ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

अधि. ज्येष्ठ २०८३ जून २०२६

₹ ३०

कविता

पर्यावरण बचाओ

– महेन्द्र देवांगन 'माटी'

पेड़ लगाओ मिल सभी, देते हैं जी छाँव।
शुद्ध हवा सबको मिले, पर्यावरण बचाव।।

पेड़ों से मिलती हमें, लकड़ी फल औ' फूल।
गाँव गली में छोरियाँ, रस्सी बाँधे झूल।।

पर्यावरण विनाश से, मरते हैं सब लोग।
कहीं बाढ़ सूखा कहीं, जीव रहे हैं भोग।।

जब–जब काटे वृक्ष को, मिलती उसकी आह।
भुगत रहे प्राणी सभी, ढूँढ रहे हैं राह।।

सड़क बनाते लोग हैं, वृक्ष रहे हैं काट।
पर्यावरण विनाश कर, देख रहे हैं बाट।।

पानी डालो रोज के, पौधे सभी बचाव।
मत काटो तुम पेड़ को, मिलजुल सभी लगाव।।

पंछी बैठे डाल में, फुदके चारों ओर।
चींव–चींव करते सभी, होते ही वह भोर।।

पेड़ों से मिलती हवा, श्वासों का आधार।
कट जाए यदि पेड़ तो, टूटे जीवन तार।।

माटी में मिलते सभी, सोना चाँदी हीर।
पर्यावरण बचाय के, समझो माटी पीर।।

दो दिन की है जिंदगी, समझो इसका मोल।
माटी बोले प्रेम से, सबसे मीठे बोल।।

– कवर्धा (छत्तीसगढ़)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

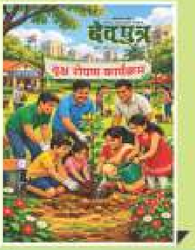

अधि.ज्येष्ठ	२०८३	वर्ष	४६
जून	२०२६	अंक	१२

संपादक
गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक
नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	३०० रुपये
दस वर्षीय	:	५००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१८० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित।

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

मैं एक रेलयात्रा में था। मेरे सामने एक बहुत सुंदर भाई-बहनों की जोड़ी भी अपने पिता के साथ रेलगाड़ी में सवार थी। मैंने सहज ही बातचीत आरंभ की तो पता चला वे जुड़वाँ हैं और इस वर्ष सातवीं कक्षा उत्तीर्ण की है।

हमारी चर्चा बड़ों की चर्चाओं में बार-बार गुम हो रही थी। रेल के डिब्बे में ईरान-अमेरिका-इजराइल युद्ध के कारण संभावित गहरे ऊर्जा संकट पर केन्द्रित था। ऊर्जा संकट यानि रसोई गैस, डीजल, पेट्रोल आदि की किल्लत हो सकती हैं। कुछ लोग सरकार के प्रयत्नों की समीक्षा कर रहे थे तो कुछ सामान्य नागरिकों के कर्त्तव्यों की बात कह रहे थे। बीच में थोड़ा अवसर मिला तो मैंने बच्चों से पूछा- ''आप क्या सोचते हैं? क्या उपाय है?''

आप जैसे उन बच्चों का उत्तर बहुत अनूठा था। वे बोले- ''हम तो अपनी दादी के गाँव जा रहे हैं पूरी छुट्टी वहाँ बिताएँगे।'' ''उससे क्या होगा?'' मैंने पूछा तो बहन ने कहा- ''अरे तब हमें रसोई गैस की आवश्यकता ही नहीं होगी? वहाँ भोजन बनाने के और भी साधन हैं, कंडे, लकड़ी और दादाजी ने तो सोलर कूकर भी खरीदा हुआ है।''

बात में दम तो था। गाँवों में ऊर्जा के विकल्प अभी भी अधिक है। मैंने पूछा ''गोबर गैस संयत्र भी है क्या?'' बच्चे उत्तर नहीं दे पाए पर उनके पिताजी ने कहा- ''हाँ, वह भी है कुछ घरों में, हमारे यहाँ लगवाना है।''

मैंने बच्चों को कुरेदा- ''ये लकड़ी जलाओगे तो पेड़ समाप्त होंगे, धुँए से प्रदूषण भी होगा?''

''प्रदूषण तो इतने बम फोड़ने वाले भी फैला ही रहे हैं न? थोड़े दिन का संकट टालने हेतु लकड़ी जलाने से इतना प्रदूषण तो नहीं होगा न?'' भैया बोला।

मैंने कहा- ''पर पेड़ तो कटेंगे?''

बहन बोली- ''पेड़ लगाए भी जाएँगे। सदियों से हम प्रकृति को ऐसे ही रिचार्ज करके उपयोग करते रहे हैं संकट तो तब होता है जब हम रिचार्ज न करें और उपयोग करते रहें।''

बच्चों की योजना मुझे अच्छी लगी- ''गाँव जाएँगे, गैस बचाएँगे, पेट्रोल बचाएँगे, पेड़ लगाएँगे। छुट्टी मनाएँगे।'' दादा-दादी को भी अच्छा लगेगा।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

कहानी

- चल चल सायकिल -अमिताभ शंकर ०५
- नए दादा जी -हरीश कुमार 'अमित' ०९
- विश्राम धाम -सुधा भार्गव २४

छोटी कहानी

- अशोक वन में महोत्सव -डॉ. सतीश चन्द्र भगत ४०
- ऊँट और सियार -टीकम चन्दर ढोडरिया ४४

नाटक

- ओजोन की गुहार -डॉ. पूजा अलापुरिया 'हेमाक्ष' १८
- रानी दुर्गावती की अमर.. -साक्षी रोकड़े २७

लघु आलेख

- जानो अपने खून को -डॉ. कमलेन्द्र कुमार ३३

लघु कथा

- शोक का दिन -महेश कुमार केशरी ३८

प्रेरक प्रसंग

- साहस और संवेदना -मुग्धा पांडे ४५

संस्मरण

- वात्सल्य मूर्ति ..... -गोपाल माहेश्वरी २२

कविता

- पर्यावरण बचाओ -महेन्द्र सेवांगन माटी ०२
- पाँच शिशु गीत -मनोज जैन ४१
- नानाजी -डॉ. रोहिताश्व अस्थाना ४६
- म्याऊँ म्याऊँ गाती.... -महेन्द्र कुमार वर्मा ४६
- अभिलाषा -प्रिया देवांगन 'प्रियू' ४७
- भारी धूप -पवन पहाड़िया ५१

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १४
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल ३६
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ४३
- छ: अँगुल मुस्कान - ४९
- पुस्तक परिचय - ५०

बौद्धिक क्रीडा

- पहेलियाँ बूझो तो जानें -चैनराम शर्मा २३
- भूल-भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी ३२
- बाल पहेलियाँ -गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र' ३९
- मस्तिष्क का व्यायाम -देवांशु वत्स ३९
- शब्द पहेली -राजेश गुजर ४७

चित्रकथा

- आठ बजे -संकेत गोस्वामी १३
- लाल बुझक्कड़ काका के..... -देवांशु वत्स ३५

एवं
संकेत गोस्वामी की जानकारी व
मनोरंजन से भरी विशेष प्रस्तुतियाँ

क्यू आर कोड से भी जमा कर सकते हैं आप देवपुत्र का सदस्यता शुल्क

क्यू आर कोड से शुल्क जमा करने पर स्क्रीन शॉट, अपना नाम, पूरा पता, पिनकोड सहित एवं मोबाइल नम्बर, प्रबंध संपादक श्री. नारायण चौहान के व्हाट्सएप नंबर 8103700552 पर अवश्य प्रेषित करें।

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - ''**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**'' आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

चल चल साइकिल

– अमिताभ शंकर

हिमाचल प्रदेश की पार्वती घाटी के कनावर फॉरेस्ट कॉलेज के साइकिल स्टेंड में अपनी साइकिल लगाकर स्नो लेपर्ड शुभ्र बैग लेकर बाहर निकल ही रहा था कि बाइक पर तीन सवारी करते हुए ब्लैक बेयर रीछालू आ धमका। तीनों में किसी के सर पर हेलमेट न था। तीनों ने एक–दूसरे को आँख मारी और शुभ्र पर छींटाकशी प्रारंभ कर दी। उसकी पूँछ को अपने जूते से दबाते हुए सीबू सिवेट कैट बोला, ''अरे, अपने डैडी से कह कर एक बाइक क्यों नहीं ले लेता? नर्सिंग होम से इतना रुपया जो कमा रहे हैं उससे केवल बटुआ मोटा बना रहे हैं, क्या?''

रीछालू ने भक–भक करते हुए कहा, ''जाकर अपने डैडी से बोल कि जब कमाई नहीं है तो फालतू में क्यों नर्सिंग होम चला रहे हैं? एक किराना की दुकान ही खोल लें। स्वयं भी तो केवल साइकिल सवारी ही करते हैं। मक्खीचूस।''

''पिताजी कहते हैं स्वास्थ्य के लिए साइकिल चलाना आवश्यक है। और मैं किस पर सवारी करके कॉलेज आता हूँ, इससे तुम लोगों को क्यों परेशानी होती है?''

''अरे बाप रे! अबे देख, शुभ्र को तो गुस्सा करना भी आता है।'' भिंडा भेड़िये की बात पर तीनों

खीं–खीं करने लगे।

वे तीनों इसी प्रकार से सबसे व्यवहार करते हैं। शुभ्र कक्षा की ओर जाने लगा तो पीछे से रीछालू बोला– ''आ जा! एक बार मेरी बाइक को जरा छू तो ले। मैं कुछ न कहूँगा। बोले तो आज शाम तुझे अपनी बाइक पर एक चक्कर लगा दूँ?''

ऐसा तो प्रतिदिन होता है। पर पता नहीं क्यों आज शुभ्र के सीने में एक टीस–सी होने लगी। 'पिताजी आखिर बाइक क्यों नहीं दिला देते?' संध्या को जब घर लौटा तो उसके पिता हिमांशु और दादा धौलराम बैठकर चाय पी रहे थे। अपना ब्रेड जैम खाते हुए उसने हिमांशु से कहा– ''पिताजी! अब मुझे भी एक बाइक दिलवा दो। सारे मित्र मुझे ताना मारते हैं।''

'कॉलेज के लिए ३ किलोमीटर जाना ३ किलोमीटर आना। इसके लिए बाइक लेकर क्या करेगा? मैं तुझे यह नहीं कहूँगा कि इससे तेरी एक्सरसाइज भी हो जाती है। तेरा स्वास्थ्य ठीक रहेगा। यह भी नहीं कहूँगा साइकिल चलाने से हवा में पेट्रोलवाली जहरीली गैस वगैरह नहीं फैलते। यह सब बातें तो रटी रटाई हो गई हैं। सुनते–सुनते सबके कान सड़ गए हैं। बदला कुछ नहीं। मैंने रोगियों के लिए एम्बुलेंस ले रखा है। किन्तु अपनी कार नहीं ली। ज्ञात है गढ़चिरौली के डॉ. प्रकाश आम्टे और उनकी पत्नी मंदाकिनी भी गोंड आदिवासियों की सेवा में ही आश्रम बना डाले? वहीं जंगल में रहते हैं। तामझाम से दूर। दोनों साइकिल से ही आते–जाते हैं। घायल पशुओं की देखभाल करते हैं। उनका भाई विकास भी ऐसा ही डॉक्टर है। इनसे हम कुछ नहीं सीख सकते?''

''आप तो कुछ समझते ही नहीं। सब कहते हैं तेरे पिता नर्सिंग होम चला रहे हैं या बनिये की दुकान जो एक बाइक दिलवा नहीं सकते?'' शुभ्र आज

मानो अड़ने लगा।

''तू बाइक रखेगा कहाँ? आँगन में तो हम तीनों की साइकिलें हैं। कभी-कभी एम्बुलेंस या विजिटिंग डॉक्टर की कार की भी जगह चाहिए।''

''क्यों दादाजी की साइकिल की क्या जरूरत है? वो तो ऐसे ही पड़ी है। उसे बेच दीजिए।''

''हाँ हाँ, वही ठीक रहेगा हिमा।'' धौलराम ने मुस्कुरा कर पोते की तरफदारी की। पर उनकी हँसी में मानो एक दर्द छुपा था।

''यह तू क्या बक रहा है?'' कहते हुए शुभ्र की माँ हिमा ने बेटे के सर पर हाथ धरा, ''तुझे ज्ञात नहीं कि तेरे दादाजी ने अपनी पहली कमाई से वह साइकिल खरीदी थी? अपने भाई-बहनों का पालन-पोषण करना, घरवालों की देखभाल- उन दिनों इनके सर पर सारा परिवार का बोझ था। और तू उनका पोता होकर- ?''

''अरे रहने दो बहू! उसकी अब क्या आवश्यकता रह गयी है?'' धौलराम ने शुभ्र की ओर देखते हुए कहा।

''यह सब रास्ते पर नक्शेबाजी करने का चक्कर है, बस। शो'बाजी करने वाले तो साइलेंसर तक हटा देते हैं ताकि सारे लोग चौंक कर इनको सवारी करते हुए देखें। सिर्फ दिखावा। अपने काम धाम के लिए बाइक लें तो अलग बात है।'' अपने बेटे की करतूत पर हिमा को दु:ख होने लगा।

''आवश्यकता क्यों नहीं है बाबूजी?'' हिमांशु बोला, ''अगले २१ अगस्त को वर्ल्ड सीनियर सिटिजनस डे के दिन कनावर जंगल के उम्रदराज लोगों की साइकिल रेस होगी। आपको भी हिस्सा लेना है।''

''अरे बेटा! अब इस आयु में क्यों मुझे परेशान कर रहा है? कहीं कोई चोट-वोट लग गई तो तेरी दिक्कत।''

''सच दादू? आप साइकिल रेस में भाग लोगे?'' खुशी के मारे शुभ्र उनसे लिपट गया, 'मेरा दादा सबसे न्यारा/सबको साइकिल में पछाड़ा।'

दो दिन बाद शुभ्र कॉलेज से लौट रहा था। तभी पीछे से फुल स्पीड से बाइक दौड़ाते हुए रीछालू ने उसे ओवरटेक करते हुए सामने के रेस्तोराँ में बाइक रोक ली। भिंडा ने आवाज लगाई, ''आ जा शुभर! तू भी क्या याद करेगा? आज रीछालू हम सबको नई बाइक के लिए ट्रिट दे रहा है।''

शुभ्र तो गिरते-गिरते बचा था। किन्तु बदमाशों के मुँह कौन लगे? वह चुपचाप आगे चल दिया।

पर एक दूसरी घटना हो गई। जोश में लापरवाही के कारण रीछालू बाइक की चाबी उसी में

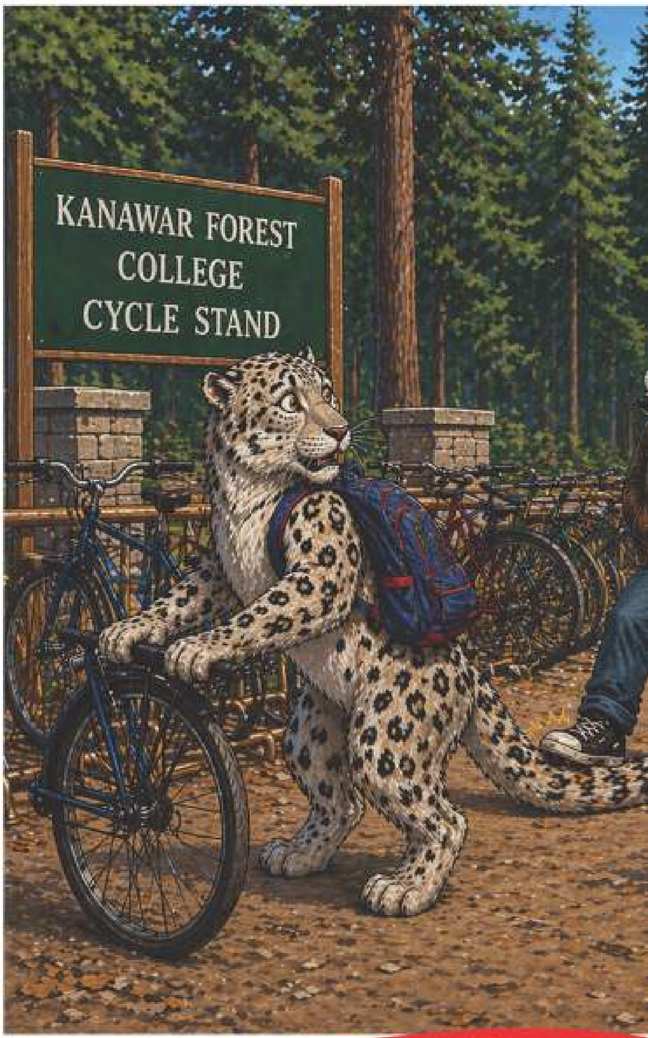

छोड़ आया था। इतने में चुपके से सिग्गा सियार उचक्का आ पहुँचा और बाइक लेकर नौ–दो ग्यारह हो गया।

सीबू चिल्लाता रहा, ''अबे रीछालू! तेरी बाइक। अरे उसे पकड़ो। चोर, चोर!''

भों.... तब तक बाइक काफी आगे निकल गयी थी। उसके आगे साइकिल पर शुभ्र जा रहा था। तीनों चिल्लाने लगे, ''अरे शुभ्र! उस चोर को पकड़। हमारी बाइक लेकर भाग रहा है।''

पीछे मुड़कर देखते ही शुभ्र को सारी बात समझ में आ गई। तड़ाक से वह साइकिल से उतरा और बाइक पर उछलकर सिग्गा को पीछे से धर

दबोचा। और बाइक को ऑफ करके सिग्गा को जमीन पर पटक दिया। धड़ाम। फिर क्या था? दौड़ते हुए तीनों नालायक भी पहुँच गए।

सिग्गा की जो धुनाई हुई, वह तो अलग कहानी है। 'धन्यवाद शुभ्र!' नजर झुकाते हुए रीछालू ने उससे कहा।

''देखा? मेरी साइकिल तेरी बाइक की रक्षा कर सकती है किन्तु तुम लोग फालतू में भाव खाते हो। दूसरों को उलाहना देना जानते हो, बस।''

२१ अगस्त को बुजुर्गों की साइकिल रेस हो रही थी। हाथी, फिजेंट पक्षी, चकोर, कस्तूरी मृग, तेंदुआ– सारे जीव–जन्तु कनावर जंगल के रास्ते के दोनों ओर खड़े होकर ताली बजा रहे थे, सबको हिम्मत दे रहे थे, 'जिसके दिल में उमंग/जीत ली है उसने जंग!'

शुभ्र अपने दादा की साइकिल लेकर स्टार्टिंग पाईंट पर खड़ा था। धौलराम आकर साइकिल पर बैठ गए। दूसरे प्रतियोगी– हाथी, भालू, हिम तेंदुआ, हिमालय के बकरे आदि– अपनी–अपनी साइकिल लेकर तैयार खड़े थे। सीटी बजी।

ट्रिंग–ट्रिंग... खड़बड़ खड़बड़। जंगल के रास्ते साइकिलें दौड़ने लगीं।

हो हो! चारों ओर उल्लास का फुहारा। आखिर रेस के अंत में धौलराम ही प्रथम आए। सारे लोग उन्हें लेकर नाचने लगे। हिमांशु और हिमा ने सबको दावत का न्योता दे दिया।

घर लौटते समय शुभ्र धौलराम को उनकी साइकिल के कैरियर पर बैठाकर चलाने लगा। वह कह रहा था, ''ददू, अब यह साइकिल कहीं नहीं जाएगी। यह मेरे दादाजी की साइकिल है। कनावर जंगल का सिकन्दर! आप पिताजी से कह देना, मुझे बाइक–साइक नहीं चाहिए। हम दोनों साइकिल की सवारी ही करेंगे, ददू, ठीक कहा न?''

– जयपुर (राजस्थान)

दिमाग दौड़ाओ और खोजो

– संकेत

यहां एक चेहरा ऐसा है जो कहीं भी दोहराया नहीं गया, उसे खोजो।

सही उत्तर–चौथी पंक्ति में दूसरा चेहरा ऐसा है जो कहीं भी दोहराया नहीं गया।

नए दादाजी

– हरीश कुमार 'अमित'

शाला की बस से उतरकर पीयूष अपने घर पहुँचा तो दरवाजा उसकी माँ ने नहीं, बल्कि दादाजी ने खोला।

''माँ नहीं हैं क्या घर में?'' घर के अंदर आते हुए पीयूष ने दादाजी से पूछा।

''बेटा! वह तुम्हारे नानाजी का स्वास्थ्य खराब हो गया था आज सुबह। इसलिए तुम्हारी माँ चिकित्सालय गई हैं उन्हें देखने।'' दादाजी ने उत्तर दिया।

''क्या हो गया नानाजी को?'' चिन्ताभरी आवाज में पीयूष पूछने लगा।

''कुछ विशेष नहीं बेटा! बस सुबह छाती में थोड़ा दर्द हुआ था।'' दादाजी ने गोलमोल-सा उत्तर दे दिया। तभी जैसे उन्हें कुछ याद आ गया और वे पीयूष से कहने लगे- ''बेटा! कपड़े बदलकर मुँह-हाथ धो लो। भोजन बनाकर रख गई थीं तुम्हारी माँ! अपना भोजन ले लेना रसोई से।''

''ठीक है दादाजी!'' कहते हुए पीयूष अपने कमरे की ओर बढ़ गया।

कुछ देर बाद वह रसोई में गया तो खाना लेने के लिए प्लेट, कटोरी, चम्मच आदि ढूँढ़ना उसके लिए जैसे एक नए प्रकार का अनुभव था। इससे पहले तो माँ हमेशा थाली में खाना परोसकर उसे दे दिया करती थीं।

अपना खाना लेकर वह डाइनिंग टेबल पर भोजन करने लगा। उसे माँ की बहुत याद आ रही थी। माँ घर में होती थीं, तो घर और तरह का लगता था।

खाना खाकर वह अपने कमरे में चला गया। 'माँ तो शायद शाम तक आएँगी, थोड़ी देर टी. वी. देख लेता हूँ फिर सारा गृहकार्य कर लूँगा। माँ के आ जाने पर ढेरसारी बातें करूँगा उनसे।' सोचते हुए उसके अपने कमरे में लगा टी. वी. चलाना चाहा, पर टी. वी. चला ही नहीं। पीयूष ने रिमोट के बटन को कई बार दबाकर देखा, पर टी. वी. फिर भी नहीं चला। उसने कमरे की ट्यूबलाइट जलाकर देखनी चाही, लेकिन वह भी नहीं जली।

''लाइट नहीं है। इन्वर्टर भी काम नहीं कर रहा। दादाजी से बात करता हूँ।'' सोचते हुए वह दादाजी के कमरे में चला गया। वे कुर्सी पर बैठे हुए कुछ सोच रहे थे।

''दादाजी! लाइट तो सुबह से ही नहीं है। अपनी सोसायटी का ट्राँसफॉर्मर जल गया है, इसलिए शाम से पहले तो आनी नहीं है लाइट। लगता है इन्वर्टर की बिजली भी समाप्त हो गई है। अभी तो सूरज की रोशनी है, तुम अपना गृहकार्य कर लो।'' दादाजी ने कहा।

''ठीक है दादाजी!'' कहते हुए पीयूष उनके कमरे से बाहर आ गया।

शाला से आने के बाद भोजन करके वह कुछ देर टी. वी. देखता था या कम्प्यूटर पर गेम्स खेलता था, किन्तु आज तो बिजली न होने के कारण से ऐसा कर पाना संभव नहीं था। वह अनमना-सा अपने बिस्तर पर लेट गया। उसे बड़ा अजीब-अजीब-सा लग रहा था। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि माँ घर पर नहीं थीं और फिर ऊपर से बिजली भी नहीं थी, नहीं तो टी. वी. देखने या कम्प्यूटर गेम्स खेलने में उसका कुछ समय निकल जाता।

तभी उसके दिमाग में आया कि क्यों न माँ से फोन पर बात की जाए। वह बिस्तर से उतरकर फिर से दादाजी के कमरे की ओर चल पड़ा।

दादाजी चुपचाप बिस्तर पर लेटे हुए छत की ओर निहार रहे थे।

''दादाजी! आपके मोबाइल से माँ से बात करनी है।''

''बेटा! उसकी बैटरी भी समाप्त हो गई है। लैंडलाइन से बात कर लो।'' दादाजी ने कहा।

''ठीक है।'' कहता हुआ पीयूष माँ-पिताजी के कमरे की ओर बढ़ने लगा जिसमें लैंडलाइन फोन लगा था। पीयूष ने माँ का मोबाइल नंबर मिला दिया। माँ के फोन उठाने पर पीयूष के 'हेलो' कहते ही वे बोलीं, ''खाना-वाना खा लिया न बेटू?''

''खाना तो खा लिया है माँ! पर लाइट ही नहीं है सुबह से, इन्वर्टर भी समाप्त हो गया है। न टी. वी. चल रहा है, न कम्प्यूटर। दादाजी के मोबाइल की बैटरी भी समाप्त हो गई।'' पीयूष ने एक ही साँस में सारी बातें कह सुनाईं।

''बेटू! आ जाएगी लाइट, चिन्ता मत करो।'' माँ ने पीयूष को ढाँढस बँधाया।

''माँ! दादाजी बता रहे थे कि अपनी सोसायटी का ट्राँसफॉर्मर जल गया है इसलिए शाम से पहले आएगी नहीं लाइट।'' पीयूष ने बताया।

''अच्छा!'' माँ बोलीं।

''आप कब आओगे माँ?'' पीयूष ने उत्सुक स्वर में पूछा।

''बेटू! अभी तुम्हारे नानू की तबीयत पूरी तरह से ठीक नहीं है। इसलिए मैं कल दिन में ही आ पाऊँगी घर।'' माँ ने उत्तर दिया।

''कल? कल आओगे आप?'' पीयूष ने हैरानी से पूछा।

''हाँ बेटू!''

''आज ही आ जाओ न! आज क्या, अभी!'' पीयूष ने मचलते हुए कहा।

''बेटू! कल ही आ पाऊँगी मैं।'' माँ ने अपनी बात दोहराई।

''पिताजी भी टूर पर गए हैं। परसों वापिस आना है उनको। मैं अकेले कैसे रहूँगा, माँ!'' पीयूष कहने लगा।

''बेटू! तुम अकेले थोड़ा ही न हो, तुम्हारे दादाजी भी तो हैं घर में। वे रखेंगे न तुम्हारा पूरा ध्यान।'' माँ ने पीयूष को समझाया।

''आज ही आ जाती माँ तो कितना अच्छा रहता।'' पीयूष फिर वही बात कहने लगा।

''बेटू! तुमसे कहा न चिन्ता मत करो। दादाजी रखेंगे तुम्हारा पूरा-पूरा ध्यान।'' माँ कह रही थीं।

''ठीक है, माँ!'' पीयूष बोला।

''अब तुम अपना सारा गृहकार्य पूरा कर लो। ऐसा न हो कि लाइट न आए और गृहकार्य अधूरा रह जाए।'' माँ ने हिदायत दी।

''ठीक है, माँ!''

तभी माँ बोलीं- ''बेटू! जरा दादाजी से बात करा दो।''

पीयूष ने आवाज देकर दादाजी को बुलाया और रिसीवर उन्हें पकड़ा दिया। दादाजी ने कुछ देर तक माँ से बात की और फिर कहने लगे- ''ठीक है बहू! तुम चिंता ना करो, मैं सब देख लूँगा।'' इसके बाद उन्होंने फोन का रिसीवर रख दिया।

''बेटा! तुम अपना गृहकार्य पूरा कर लो जल्दी से लाइट पता नहीं कब आएगी।'' दादाजी ने पीयूष को कहा तो वह अपने कमरे की तरफ बढ़ गया। दादाजी भी अपने कमरे में चले गए।

पीयूष ने अपना गृहकार्य करना शुरू कर दिया। पढ़ाई में वह काफी होशियार था। गृहकार्य पूरा करने में उसे कोई कठिनाई नहीं हो रही थी, पर गणित के एक प्रश्न को हल करते हुए वह अटक गया। काफी प्रयत्न करने पर भी वह उस प्रश्न का उत्तर निकाल नहीं पा रहा था।

''माँ घर में होतीं तो वे झट-से उसे यह प्रश्न समझा देतीं। पिताजी टूर पर न गए होते तो उनके ऑफिस से लौटने के बाद उनसे ही यह प्रश्न समझ लेता, पर अब क्या किया जाए?'' वह सोचने लगा।

तभी उसके दिमाग में आया कि क्यों न गणित के इस प्रश्न का उत्तर दादा जी से पूछकर देख लिया

जाए। लेकिन यह बात भी उसके दिमाग में आई कि पता नहीं दादाजी को यह प्रश्न आता भी होगा या नहीं, बचपन से माँ और पिताजी ही उसे पढ़ाई में सहायता करते आ रहे थे। पढ़ाई के बारे में दादाजी से कभी कुछ पूछने की आवश्यकता पड़ी ही नहीं थी उसे।

कुछ देर सोचने के बाद उसने यही तय किया कि वह एक बार दादाजी से उस प्रश्न का उत्तर पूछकर देख लेगा। यदि उन्होंने प्रश्न समझा दिया तो ठीक, वरना वह अपने किसी मित्र को फोन करके यह प्रश्न समझ लेना।

पीयूष गणित की पुस्तक और रफ कॉपी लेकर दादाजी के कमरे में गया और कुछ हिचकते हुए उसने अपनी समस्या बताई।

पीयूष की बात सुनते ही दादाजी उठकर बैठ गए और फिर पास ही तिपाई पर रखा अपना चश्मा उठाकर आँखों पर लगा लिया। उसके बाद उसकी गणित की पुस्तक हाथ में लेकर वह प्रश्न पढ़ा और फिर देखते-ही-देखते कुछ ही देर में उन्होंने उस प्रश्न को रफ कापी में हल करके दिखा दिया। प्रश्न हल करते हुए वे साथ ही साथ पीयूष को उसका उत्तर समझाते भी जा रहे थे।

प्रश्न का उत्तर पुस्तक के अन्त में दिए गए उत्तर से मेल खा रहा था। पीयूष को वह प्रश्न पूरी तरह समझ आ गया था।

उसने हैरानी से दादाजी की ओर देखा और पूछने लगा, ''आपको गणित आता है क्या, दादाजी ?''

पीयूष की बात सुनकर दादाजी हँसने लगे और फिर उसके कंधे पर हाथ रखकर बोले- ''बेटा! तुम्हें पता नहीं कि मैं चालीस वर्षों तक शाला में अध्यापक रहा हूँ इस तरह के प्रश्न हल करना तो मेरे बाएँ हाथ का खेल है।''

''अच्छा ?'' पीयूष की आँखें हैरानी से फैल गई। ''मुझे तो पता ही नहीं था।''

माँ के आज वापस न आने की बात सुनकर पीयूष को चिंता होने लगी थी कि रात के खाने का क्या होगा। आखिर उसने दादाजी से इस बारे में पूछ ही लिया।

उसकी बात सुनकर दादाजी मुस्कुराने लगे और फिर बोले- ''तुम चिंता न करो, बेटा! पहले अपना गृहकार्य पूरा कर लो। फिर हम दोनों चलेंगे किचन में।''

''ठीक है।'' पीयूष ने अभी यह कहा ही था कि तभी फ्रिज के चल पड़ने की आवाज सुनाई दी।

''बिजली आ गई!'' दादाजी उत्साह भरे स्वर में बोले।

''हाँ! दादाजी, आ गई लाइट!'' पीयूष ने भी उत्साह-भरी आवाज में कहा।

गृहकार्य पूरा करके पीयूष दादाजी के पास

गया। उसे हल्की–हल्की–सी भूख लग आई थी।

दादाजी और पीयूष रसोई में गए। पीयूष सोच रहा था कि पता नहीं दादाजी को गैस जलानी भी आती होगी या नहीं, किन्तु दादाजी ने रसोई में जाते ही गैस जला दी। फिर फ्रिज से दूध का पतीला निकालकर उसे एक बर्नर पर रख दिया और दूसरे बर्नर पर चाय बनाने के लिए भगौने में पानी उबलने रख दिया।

दूध गरम हो गया तो दादाजी ने उसे गिलास में डाला ओर चीनी मिलाकर पीयूष को पीने के लिए दे दिया। तब तक उनकी चाय का पानी भी उबल चुका था। दादाजी ने चाय बनाई और उसे कप में डालकर अपने कमरे की ओर चलने लगे। पीयूष भी दूध का गिलास पकड़े–पकड़े उनके साथ उनके कमरे में आ गया। दादाजी अपने बिस्तर पर बैठ गए। पीयूष भी पास पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया।

''रात के खाने में क्या खाना है?'' चाय का घूँट भरते हुए दादाजी ने पूछा।

''ब्रेड पड़ी होगी। सुबह की सब्जी के साथ वही खा लेंगे।'' पीयूष अनमने स्वर में कहने लगा।

''अरे! ब्रेड क्या खानी है रात को! कुछ बढ़िया–सा बनाते हैं।'' दादाजी बोले।

''किन्तु कुछ बढ़िया–सा बनेगा कैसे?'' पीयूष ने प्रश्न किया।

''अरे! मैं बनाऊँगा और क्या।'' दादाजी ने उत्साह–भरे स्वर में उत्तर दिया।

''आपको खाना बनाना आता है, दादाजी?'' पीयूष ने हैरानी से पूछा।

''और नहीं तो क्या! बोलो, क्या खाओगे?'' दादाजी का प्रश्न सुनकर पीयूष कुछ सोचने लगा।

तभी दादाजी कहने लगे, ''चलो! आज तुम्हें स्पेशल पुलाव बनाकर खिलाता हूँ साथ में गाजर का हलवा।''

यह सुनते ही पीयूष के मुँह में पानी भर आया।

अपने कहे अनुसार दादाजी ने स्पेशल पुलाव और गाजर का हलवा बनाया। पीयूष को दोनों चीजें बहुत स्वादिष्ट लगीं।

खाना खाने के बाद पीयूष ने दादाजी के साथ घर में ही कुछ देर चहलकदमी की पीयूष हर रोज देखता था कि रात के खाने के बाद दादाजी थोड़ी देर तक घर में ही इधर–उधर टहला करते हैं।

चहलकदमी करने के बाद जब दादाजी अपने कमरे की ओर जाने लगे, तो पीयूष उनसे पूछने लगा, ''दादाजी! मैं भी आपके कमरे में ही सो जाऊँ क्या?''

''हाँ–हाँ! क्यों नहीं? मेरा पलंग कितना बड़ा है बेटा! जाओ अपना तकिया और चादर ले आओ अपने कमरे से।''

दादाजी के पलंग पर जब पीयूष लेट गया तो उन्होंने उसे बहुत–सी कहानियाँ सुनाईं और कई मजेदार बातें भी बताईं। यह सब सुनते–सुनते वह कब सो गया, उसे पता ही नहीं चला।

अगले दिन सुबह उठने पर दादा जी ने उसका मनपसंद नाश्ता बनाया, उसे शाला के लिए तैयार होने में सहायता की, और उसे शाला बस तक छोड़कर भी आए।

दोपहर के बाद जब पीयूष शाला से घर पहुँचा तो उसकी माँ वापस आ चुकी थीं। माँ ने बताया कि उसके नानाजी का स्वास्थ्य अब ठीक है और उन्हें दवाखाने से छुट्टी मिल गई है।

माँ ने जब पीयूष से कहा कि वह कपड़े बदलकर खाना खा ले, तो पीयूष बोला, ''खाना तो मैं दादाजी के साथ ही खाऊँगा।''

पीयूष की बात सुनकर माँ हैरान हो गईं, क्योंकि वह तो शाला से आने के बाद अपने कमरे में टी. वी. देखते हुए ही खाना खाया करता था। माँ को क्या पता था कि पीयूष को अब नए दादाजी मिले थे।

– गुरुग्राम (हरियाणा)

आठ बजे

चित्रकथा-

..ठीक है कल से काम पर आ जाना..
और यह भी जान लो हम लोग नाश्ता सुबह ठीक आठ बजे कर लेते हैं...
..तुम्हें उसी हिसाब से आना होगा..
मैं याद रखूंगा साब्
लेकिन अगर मैं कभी ठीक आठ बजे ना पहुंच सकूं तो नाश्ते पर मेरा इंतजार मत करना..

बाल साहित्य में नयी शैली और अनुवाद के उस्ताद

अमर गोस्वामी

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय'

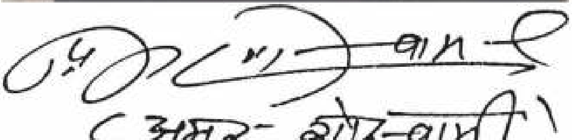

हिंदी बाल साहित्य के क्षेत्र में ऐसे भी साधक हुए हैं जिन्होंने प्रचार–प्रसार से दूर रहते हुए, बस काम और काम करने में विश्वास किया। अमर गोस्वामी जी ऐसे ही लेखक थे। उन्होंने नई नवेली शैली में बच्चों के लिए अनूठी कहानियाँ लिखीं। बांग्ला के बहुत से उत्कृष्ट बाल साहित्य का हिंदी में अनुवाद किया। यही नहीं **संपा** पत्रिका के माध्यम से बाल पत्रकारिता के क्षेत्र में भी योगदान दिया।

अमर गोस्वामी का जन्म २८ नवम्बर १९४५ को मुलतान में भगवान किशोर गोस्वामी और आशा रानी गोस्वामी जी की संतान के रूप में हुआ था। मुल्तान तब भारत का ही भाग था लेकिन देश के विभाजन के बाद यह पाकिस्तान का भाग हो गया। अमर गोस्वामी मूलतः बांग्ला भाषी थे। विभाजन के बाद उनके पूर्वज मुल्तान से उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर नगर में आकर बस गए।

अमर गोस्वामी बचपन से ही बड़े मेधावी थे। उन्होंने प्रयागराज विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम. ए. किया। दो महाविद्यालयों में अध्यापन भी किया लेकिन फिर पत्रकारिता जगत को चुन लिया। उन्होंने मनोरमा, गंगा, अक्षर भारत, गया ज्ञानोदय आदि विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में काम किया। बच्चों के लिए संपा पत्रिका भी निकाली।

बड़ों के कथा साहित्य में उनका बड़ा काम है। वे एक मूर्धन्य कथाकार के रूप में जाने जाते हैं। बच्चों के लिए उनका विपुल कथा साहित्य है। वे बाल साहित्य में नई कल्पना, मौलिक सोच और अभिनव शैली के हिमायती थे।

उनका बाल उपन्यास 'शाबाश मुन्नू' आधुनिक बाल साहित्य की प्रतिनिधि कृति के रूप में खूब लोकप्रिय हुआ। इसे हिंदी अकादमी ने पुरस्कृत भी किया था।

बाल साहित्य की उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं– 'शेरसिंह का चश्मा', 'मॉनीटर का चुनाव', 'भालू का घर', 'पगड़ी पर परियाँ', 'पिकनिक पर धमाल', 'बादलों की आइस्क्रीम', 'भालू का बच्चा', 'टिंकू की छतरी', 'नाव चली', 'जिद्दी पतंग', 'टुन्नी मछली', 'नन्हें मेंढक की सैर', 'सच्ची खुशी', 'सुदामा की मुक्ति', 'अरब देश की अजब कथाएँ' तथा अमर गोस्वामी की चुनिंदा बाल कहानियाँ।

बांग्ला से हिन्दी में उनकी ढेरों अनूदित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। उन्होंने बच्चों के लिए रवींद्रनाथ ठाकुर की पुस्तक दो हास्य एकांकी का भी अनुवाद किया था।

सुकुमार राय चुनिंदा कहानियाँ पुस्तक भी उनके ही श्रम का सुफल है। उनकी भी बहुत-सी अनूदित बाल कहानियाँ अँग्रेजी, गुजराती और बांग्ला साहित्य की थाती हैं।

२६ जून २०१२ को गाजियाबाद में उनका निधन हो गया। अपने रोचक बाल कथा साहित्य के बल पर अमर गोस्वामी जी सदैव किसी प्रकाश स्तंभ की भाँति बाल साहित्य में अमर रहेंगे। आइए, डायरी शैली ने उनकी एक प्यारी-सी प्रयोगधर्मी बाल कहानी पढ़ते हैं-

डायरी जी नमस्ते

नन्हीं मेधा है तो छोटी-सी पर बड़ी सयानी है। कक्षा चार में पढ़ती है। खेलती-कूदती है, खूब किताबें पढ़ती है, छुट्टी के दिन घर के काम में अपनी माँ का हाथ भी बँटाती है। दादी कहती हैं, हाय, बचपन में मैं इतनी सयानी नहीं थी, जितनी हमारी प्यारी मेधा बिटिया है। मेधा बिटिया को नजर न लग जाए। एक दिन मेधा को लगा कि अब वह बड़ी हो गई है। वह भी अपनी रोज की बातों को डायरी में लिखेगी। फिर क्या था, उसने अपने पिताजी से एक डायरी ली और लिखना शुरू कर दिया।

१ जनवरी।

आज डायरी लिखने का मेरा पहला दिन है। कुछ दिन पहले मैंने पढ़ा था कि हमारे बापू भी डायरी लिखते थे और चाचा नेहरू भी। मैंने सोचा कि मैं भी क्यों न लिखूँ। अपनी रोज की छोटी-बड़ी बातें। कितना आनंद आएगा। कल मैंने यह बात पिताजी से कही थी। पिताजी हँसने लगे थे। जब भी मैं कुछ कहती हूँ वह ऐसा ही करते हैं। वह बोले- ''हमारी बेटी मुनिया को देखो। कक्षा चार में पढ़ती है, किन्तु बड़ों की तरह डायरी लिखने की बात करती है। नकलची कहीं की।'' मैं कहाँ चुप रहने वाली थी। मैंने जवाब दिया, ''पिताजी! आप ही ने तो कल कहा था, बड़ों के अच्छे कामों की नकल करनी चाहिए।'' माँ ने मेरी हिम्मत बढ़ाई बोलीं, ''हाँ बेटी! तुम डायरी अवश्य लिखो। इसी तरह लिखने की आदत पड़ेगी।'' मैंने तय कर लिया है कि अब प्रतिदिन मैं डायरी लिखूँगी। आज कुछ देर हो गई है। माँ जलपान के लिए मुझे बुला रहीं हैं। आज इतना ही।

२ जनवरी।

कल इतिहास की कक्षा में मैंने शिवाजी के बारे में पढ़ा। कितने वीर थे वह, पर वह किसी को नहीं सताते थे। अपने सोनू को उनसे सबक सीखना चाहिए। लालच में खा-खाकर कितना मोटा हो गया। हरदम दूसरों को सताता रहता है। अपनी माँ को भी सताता है। शिवाजी अपनी माँ का कितना आदर करते थे। हमारे इतिहास के गुरुजी ने बताया कि वह सभी धर्मों के लोगों का आदर करते थे। मुझे सभी धर्मों के गुरु बहुत अच्छे लगते हैं। मैं उनके चित्र काटकर अपनी कॉपी पर चिपकाऊँगी।

३ जनवरी।

कल मेरी सहेली किसी के बाग से तोड़कर खट्टे बेर लाई थी। मुझे बेर बहुत अच्छे लगते हैं। माँ मुझे खाने को मना करती है। कहती हैं, इनसे गला खराब होता है और स्वास्थ्य भी। पर उस समय मैं माँ की सलाह भूल गई। बेर खा लिए, पर बाद में दिनभर पछताती रही। मैंने शाम को यह बात माँ को बता दी। माँ बोलीं- ''ठीक है। अब आगे से ऐसा मत करना। आज मैं भी अपनी सहेली को समझाऊँगी कि न वह किसी के बाग से बेर तोड़े और न वह इतनी खट्टी चीजें खाए। दोनों ही बुरी बात हैं।''

४ जनवरी।

कल जब मैं विद्यालय से घर के लिए निकल रही थी, तो एक बिल्ली मेरा रास्ता काट गई। मेरी दादी कहती है कि बिल्ली का रास्ता काटना अच्छा नहीं होता है। यह बात सोचकर मैं घबरा गई, किन्तु मेरा विद्यालय का रिक्शा खड़ा हुआ था, रुकती तो देर हो जाती। मैं रिक्शे में बैठकर चली गई।

उस दिन विद्यालय में मेरा ध्यान बिल्ली पर ही लगा रहा। फिर भी मैं अपनी पढ़ाई करती रही। गणित की कक्षा में सभी प्रश्न सही हल कर दिए। गणित के गुरुजी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने मुझे शाबासी दी। वह प्रश्न थोड़ा कठिन था और कक्षा में दो-चार बच्चे ही हल कर पाए थे।

इसके बाद विज्ञान की कक्षा थी। उस दिन विज्ञान के नए गुरुजी कक्षा में पढ़ाने आए। उन्होंने विज्ञान के बारे में इतनी रोचक बातें बताईं कि मैं दंग रह गई। उन्होंने हम बच्चों को विज्ञान की एक कहानी भी सुनाई। मुझे लगा कि कितना अच्छा होता कि हमें दूसरे विषयों में भी इसी तरह कहानी सुनने को मिलती।

मैंने कुछ हिचकिचाते हुए अपने विज्ञान के शिक्षक से पूछा- ''क्या बिल्ली के रास्ता काटने से कोई नुकसान होता है?'' विज्ञान के शिक्षक ने कहा- ''कि ये सब मनगढ़ंत बातें हैं। पुराने लोगों के अंधविश्वास हैं। फिर उन्होंने अंधविश्वास पर एक छोटी-सी कहानी सुनाई कि अंधविश्वासों के कारण किस तरह लोग अपना ही नुकसान कर बैठते हैं। यह सुनकर मेरा डर दूर हो गया। अब मैं अपने दादाजी को भी समझाने का प्रयास करूँगी। पर दादीजी को तो पिताजी भी नहीं समझा पाते। खैर देखूँगी।

५ जनवरी।

नंदन पर मुझे बड़ी खीझ आती है। मुझसे थोड़ा बड़ा क्या हो गया, हरदम ऐंठा ही रहता है। माँ और पिताजी के सामने तो मुझसे कुछ नहीं कह पाता। उनकी पीठ पीछे मुझ पर रोब जमाने का प्रयास करता है। कल अकेले में खूब हाथापाई हो गई। मुझे चोट आ गई। मैं रोने लगी। मुझे रोते देखकर वह घबरा गया। मुझे बड़ा आनंद आया। उसने मुझे अपने हिस्से की दो टॉफियाँ दीं, जो कल पिताजी हमारे लिए लाए थे। मुझे टॉफी बहुत अच्छी लगती थी। मेरा रोना बंद हो गया। मैंने एक टॉफी मुँह में डाल ली और दूसरी उसे लौटा दी। नंदन भैया ने मुझसे कहा, ''टॉफी खाकर मुँह अवश्य धो लेना। मीठी चिपचिपी चीजें दाँतों को नुकसान पहुँचाती हैं।'' पिताजी की कही यह बात उसने मुझसे कह दी। मैं तो मुँह भी धोती हूँ और रात को सोने से पहले ब्रश भी करती हूँ पर नंदन भैया अधिकांश भूल जाता है। इस बात पर जब मैं उसे चिढ़ाती हूँ तब वह खीझकर मेरी चुटिया खींच लेता है। अब ऐसा करेगा तो मैं माँ से शिकायत कर दूँगी। पर क्या करूँ वह मेरा प्यारा भाई है। वह मुझे खूब प्यार करता है।

६ जनवरी।

कल विद्यालय में तो मैं बहुत घबरा गई थी। वहाँ एक बहुत बड़ा तालाब है। बच्चों को उस ओर जाना मना है। किन्तु कल कुछ बच्चे खेलते हुए उधर चले गए। जाने क्या हुआ कि कक्षा एक में पढ़ने वाला दीपक उस तालाब में गिर पड़ा। दीपक को पानी में डूबते देखकर सभी के हाथ-पाँव फूल गए। वहाँ भीड़ जुट गई। किसी की कुछ समझ में नहीं आया। तभी उस भीड़ में खड़ा विपिन पानी में कूद पड़ा। किसी तरह दीपक को खींचता हुआ वह तालाब के किनारे ले आया। इस बात पर हमारे विद्यालय के अध्यापक भी वहीं आ गए थे। गेम शिक्षक ने दीपक तो उल्टा लिटाकर उसके पेट से जमा पानी बाहर निकाला। फिर उसे अस्पताल ले गए। विपिन बहुत गरीब है। उसके पास पूरी किताबें भी नहीं हैं। इसीलिए उसे कक्षा में डाँट पड़ती रहती है। मैं सोच रही हूँ कि उसके पास जो किताबें नहीं हैं। क्यों न हम सभी अपने-अपने पिताजी से कहकर उसके लिए किताबें खरीद दें। मैं इस बारे में अपने सभी दोस्तों को राजी करूँगी। विपिन ने एक बच्चे की जान बचाई है। हमें भी विपिन की मदद करनी चाहिए।

कल की घटिया के बाद मुझे लगा कि सभी को प्रतिदिन एक न एक भला काम अवश्य करना चाहिए। कल जब मैं बाजार गई थी तो एक अंधे की अँगुली पकड़कर मैंने उसे सड़क पार करवाई थी। नंदन भैया ने मेरी पीठ ठोककर कहा, ''शाबास।''

७ जनवरी।

आज रविवार है। छुट्टी का एक पूरा दिन। सुबह अपना गृहकार्य समाप्त करके अपनी डायरी लिखने बैठी हूँ। कल ही पिताजी पुस्तक मेले से हम भाई-बहनों के लिए कुछ किताबें खरीद लाए हैं। आज की छुट्टी का दिन मैं उन किताबों को पढ़कर ही बिताऊँगी। छुट्टियों के दिन मैं हमेशा यही करती हूँ। गृहकार्य समाप्त करके मजेदार किताबें पढ़ती हूँ इसलिए आज की डायरी यहीं समाप्त करती हूँ। डायरी जी नमस्ते।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

ओजोन की गुहार

– डॉ. पूजा अलापुरिया 'हेमाक्ष'

पात्र

* ओजोन परत
* पेड़
* कुछ प्रतिभागी बच्चे– राशि, तेजस्वी, श्रेया, जिया, अभिमन्यु, अभिनव, सृष्टि, किमाया, प्रहर्ष और ध्रुव।

(उद्यान में कुछ बच्चे खेल रहे हैं, और तभी आसमान से ओजोन की आवाज आती है।)

ओजोन– (गुहार लगाते हुए) समय रहते सँभल जाओ। मेरी रक्षा करो। नहीं तो सब कुछ नष्ट हो जाएगा। मेरी रक्षा करो...। मुझे बचाओ....!

तेजस्वी– (सभी को संबोधित करते हुए) कौन पुकार रहा है? क्या तुम्हें कोई आवाज सुनाई दी? मैंने अभी-अभी कुछ सुना! क्या तुम सबने भी..?

राशि– हाँ! कुछ आवाज तो आई थी, लेकिन...

अभिमन्यु– लेकिन क्या?

राशि– लेकिन कौन गुहार लगा रहा है? कोई दिखाई तो नहीं दे रहा है।

अभिनव– लगता है, उद्यान के बाहर सड़क से आवाज आई होगी।

तेजस्वी– नहीं, यह आवाज अलग थी। किसी सड़क या फुटपाथ से नहीं।

अभिमन्यु– तो तुम्हारा मतलब है कि यह आवाज आसमान से आ रही थी?

तेजस्वी– हाँ! मुझे तो बिल्कुल ऐसा ही लगा।

(तेजस्वी की बात सुन सभी हँसने लगते हैं।)

सृष्टि– आसमान से आवाज कैसे आ सकती है? अब कोई आकाशवाणी नहीं होती है। दादी बताती है। भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के समय आकाशवाणी हुई थी। इसमें कंस को चेतावनी दी गयी थी कि तुम्हें मारने वाला मथुरा में जन्म ले चुका है। अब किसका वध होना है जो आकाशवाणी होगी?

(सृष्टि की बात सुन सभी खिलखिला उठे।)

तेजस्वी– आवाज तो सभी ने सुनी थी न?

सभी बच्चे– हाँ!

तेजस्वी– ये कोई सामान्य आवाज नहीं थी। यदि तुम्हें सड़क से आवाज आई थी तो चलकर देखते हैं।

(सभी बच्चे उद्यान के बाहर देखते हैं। सब कुछ सामान्य था। बच्चे वापस आते हैं, फिर से वही आवाज साफ सुनाई पड़ी।)

ओजोन– मेरी रक्षा करो। नहीं तो, सब नष्ट हो जाएगा। मेरी रक्षा करो...!

तेजस्वी– सुनो, फिर से आवाज आई।

(बच्चे इधर–उधर देखते हैं। किन्तु कुछ दिखाई नहीं देता।)

ओजोन– बच्चो! मैं यहाँ हूँ। ऊपर, आसमान की ओर।

(सभी बच्चे कुछ डर–से जाते हैं। वहाँ से भागने की सोचते हैं। तभी ओजोन उनके समक्ष प्रकट हो जाता है।)

ओजोन– बच्चो! मैं ओजोन हूँ। मुझसे डरने की आवश्यकता नहीं। मैं तो आप सभी का रक्षा कवच हूँ।

अभिमन्यु– (प्रहर्ष के कान में फुसफुसाते हुए) जैसे महाभारत में कर्ण के पास कवच–कुंडल था, वैसे ही ये हमारा कवच है।

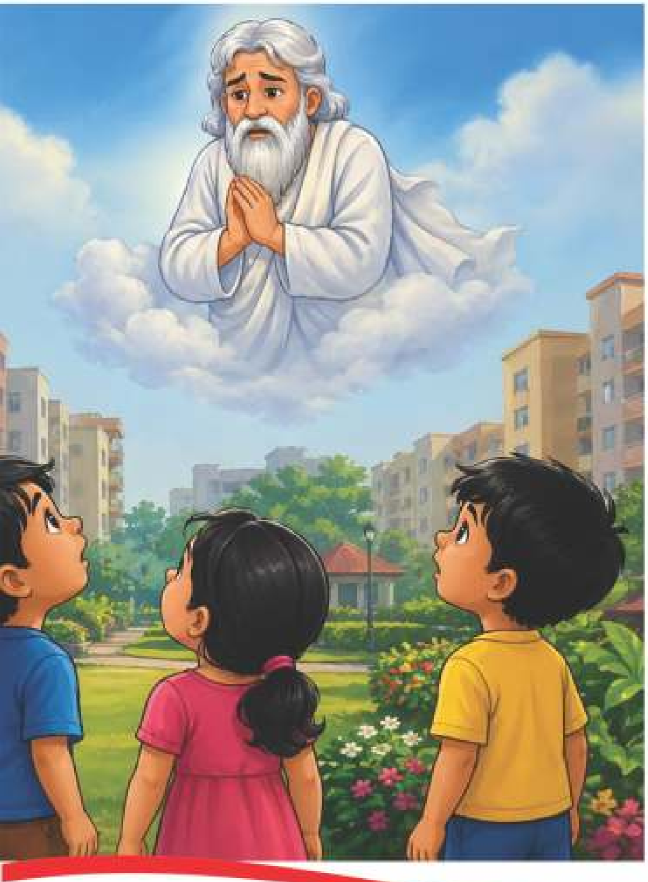

ओजोन– अभिमन्यु, तुमने ठीक कहा। मैं वैसा ही कवच हूँ।

राशि– यदि आप हमारे कवच हो तो स्वयं की रक्षा के लिए हमसे गुहार क्यों लगा रहे थे।

ओजोन– मैं बीमार हूँ।

सृष्टि– बीमार?

अभिनव– तो डॉक्टर के पास जाओ।

प्रहर्ष– यदि आप बीमार हैं तो आप गलत स्थान पर आए हैं। हम डॉक्टर नहीं हैं।

किमाया– आप वापस जाइए और हमें खेलने दीजिए। हमारा समय नष्ट मत कीजिए।

ओजोन– मेरी इस बीमारी का कारण मनुष्य ही है। मैं तो मनुष्य को खतरनाक पराबैंगनी (यूवी) किरणों से बचाने का काम करता हूँ। लेकिन आज मनुष्य बहुत स्वार्थी और उपभोक्तावादी हो चुका है। अपने मतलब के लिए वह प्रकृति को नित नए–नए घाव दे रहा है।

अभिमन्यु– भला वह कैसे?

किमाया– कुल्हाड़ी से?

तेजस्वी– अरे! किमाया अब कोई कुल्हाड़ी नहीं चलाता।

किमाया– बंदूक से या गुलेल से?

तेजस्वी– किमाया, अब बंदूक और गुलेल कहाँ से आ गए?

किमाया– यदि बंदूक और गुलेल भी नहीं है, तो फिर कैसे? (बच्चों की बात सुन पेड़ बोलता है।)

पेड़– (दुखी स्वर में) कुल्हाड़ी, बंदूक या गुलेल की चोट होती तो सहन हो जाती। आज कुल्हाड़ी की जगह बड़ी–बड़ी मशीनों ने ले ली है। जहाँ एक ही झटके में अनगिनत पेड़ कट जाते हैं। हमारा खूब विनाश किया जा रहा है।

अभिनव– हम्म! बात तो सही है।

पेड़– शुद्ध हवा, अच्छा घर, बढ़िया फर्नीचर तो सभी को चाहिए लेकिन पेड़ कोई नहीं लगाना चाहता है।

ओजोन– पेड़ों की घटती संख्या ने मुझे बीमार कर दिया है। मुझमें बड़े–बड़े सुराख हो गए हैं। जिससे मैं यूवी किरणों को धरती पर आने से रोकने में विफल होता जा रहा हूँ। मेरे छिद्रों से धरती पर आई पराबैंगनी किरणें वापस नहीं जाती और यहीं वातावरण में घुल–मिल जाती हैं।

सृष्टि– यदि यूवी किरणें वापस नहीं जाएँ तो क्या उससे हमें कुछ नुकसान होता है?

ओजोन– अवश्य ही। यूवी किरणों से मनुष्य को त्वचा का कैंसर, आँखों के कॉर्निया को नुकसान पहुँचना, त्वचा को झुलसाकर जल्दी बूढ़ा बनाना, प्रतिरक्षा तंत्र (Immune System) का कमजोर होना, जैसी भयावह बीमारियाँ हो सकती हैं।

जिया– मतलब यूवी किरणों से मनुष्य को बहुत नुकसान होता है।

पेड़– केवल मनुष्य को ही नहीं, हमें भी!

जिया– मैं समझी नहीं! आपको कैसे...?

पेड़– यूवी किरणों से पेड़–पौधों और समुद्री जीव–जन्तुओं को भी नुकसान पहुँचता है। यह पौधों के प्रोटीन और जलीय जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डालता है, जिससे मिट्टी में नमी कम होने से कृषि और खाद्य उत्पादन पर भी प्रभाव पड़ता है।

ओजोन– मैं भी वहीं कहना चाहता हूँ, समय नष्ट मत करो। खुद जागरूक बनो और अन्य सभी को जागरूक बनाओ।

ध्रुव– क्या इन खतरनाक पराबैंगनी किरणों से बचा जा सकता है?

श्रेया– मेरा भी एक प्रश्न है। ओजोन परत को छिद्रों से मुक्त किया जा सकता है?

ओजोन– हाँ! क्यों नहीं। यदि पेट्रोल–डीजल से चलने वाले वाहन का उपयोग कम करें और इन वाहनों की जगह साइकिल से चलें, पैदल चलें या सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें तो...।

श्रेया– बस इतना ही। हम तो वैसे भी साइकिल ही चलते हैं। आप चिंता मत कीजिए। आप स्वस्थ हो जाएँगे।

ओजोन– मेरी बात पूरी नहीं हुई है।

किमाया– आप बताइए। इसे तो हर बात की जल्दी रहती है। आप कहें।

(श्रेया किमाया को घूरती है, फिर हलका–सा मुस्कुराती है।)

ओजोन– सी. एफ. सी. रसायनों से मुक्त रेफ्रिजरेटर, एयर कंडीशनर और स्प्रे का उपयोग करें।

अभिमन्यु– ये सी. एफ. सी. मुक्त क्या होता है?

राशि– (आतुरता से) अरे! तुम लोगों को इतना भी नहीं पता। सी. एफ. सी. का मतलब क्लोरोफ्लोरोकॉर्बन (Chloro fluoro carbon) है। मैम ने बताया था यह एक प्रकार का मानव–निर्मित रसायन है जो कॉर्बन, क्लोरीन और फ्लोरीन परमाणुओं से मिलकर बनता है। पहले रेफ्रिजरेशन, एयर कंडीशनिंग और एरोसोल, स्प्रे में बड़े पैमाने पर उपयोग होता था।

ओजोन– (थोड़ा मुस्कुराते हुए) स्थिति संभालने के लिए राशि तुम्हारा आभार।

(सभी खिलखिला उठते हैं।)

बच्चो, आगे सुनो! कोई भी खरीदारी करते समय 'ओजोन–फ्रेंडली' (Eco-Friendly) लेबल की जाँच करें और माँ तथा घर में साफ–सफाई करने वाली बाई को बताएँ कि विंडो क्लीनर और सॉल्वेंट्स के लिए सिरका या बाइकार्बोनेट जैसे प्राकृतिक उत्पादों का उपयोग ही करें।

श्रावणी– कुछ बातें मैं भी जानती हूँ, यदि आप कहें तो.....

ओजोन और पेड़ (एक साथ)– हाँ! अवश्य।

श्रावणी– माँ–पिताजी हमेशा कहते हैं कि जब भी संभव हो, कारपूलिंग (यात्रा साझा करना) करें। बिजली की कम खपत करने वाले उपकरण और एलईडी बल्ब का उपयोग करें। सौर ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करें।

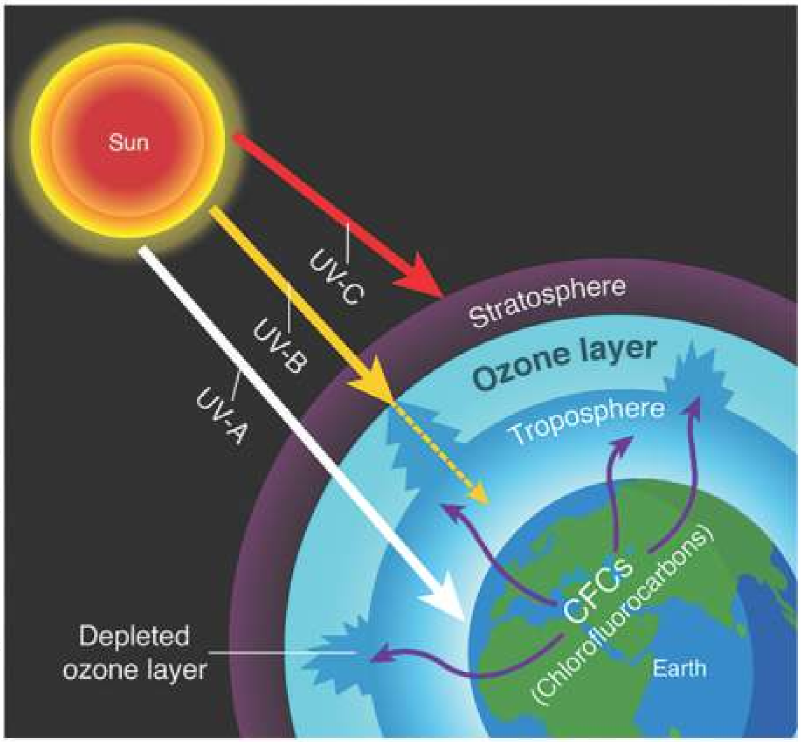

श्रेया– मैं भी बताऊँ!

किमाया– (चिढ़ाते हुए) तुम कैसे पीछे रह सकती हो? बताओ–बताओ।

श्रेया– समय–समय पर अपने एयर कंडीशन (ए.सी.) और रेफ्रिजरेटर (फ्रिज) का रखरखाव करें। पर्यावरण–अनुकूल विकल्प चुनें, जरूरत के अनुसार बिजली का उपयोग करें।

सृष्टि– अधिक–से–अधिक पेड़–पौधे लगाएँ (पेड़ खुश हो जाते हैं) क्योंकि ये वायु प्रदूषण को कम करने में सहायता करते हैं।

तेजस्वी– प्रयत्न करें कि खरीदारी स्थानीय बाजारों से हो। (मुसकुराते हुए) इसमें वाहन का उपयोग नहीं करना पड़ेगा; जिससे विषैली गैस का उत्सर्जन नहीं होगा।

(ओजोन और पेड़ बहुत प्रश्न हो जाते हैं और बच्चों से कहते हैं।)

ओजोन– बच्चो, आप तो बहुत समझदार हो।

पेड़– आप तो बहुत कुछ जानते हो। बस एक ही बात की कमी है।

किमाया– वह क्या?

ओजोन– (उदास स्वर में) मनुष्य जानता तो सब कुछ है और दूसरों को ज्ञान भी आसानी से बाँट देता है, लेकिन स्वयं ज्ञान का दुरुपयोग करता है और हमें नुकसान पहुँचाता है। यदि मनुष्य ज्ञान बाँटने की जगह व्यक्तिगत जिम्मेदारी उठाना सीख जाए तो इन पराबैंगनी किरणों से बचा जा सकता है और ओजोन यानि मुझमें होने वाले छिद्र को भी रोक सकते हो।

(मनुष्य की सच्चाई सुन सभी बच्चों के चेहरे उतर जाते हैं। फिर आपस में सभी बच्चे कुछ फुसफुसाते हैं और एक राय से किमाया को अपनी ओर से बात रखने के लिए कहते हैं।)

किमाया– हम सभी आपकी बात से सहमत हैं। अब हमें अपनी गलतियों का आभास हो गया है कि मनुष्य किस प्रकार प्रकृति का विनाश कर रहा है। हम आपसे वादा करते हैं कि हम सभी अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारियों को बखूबी निभाएँगे। हम सभी आज से समाज में जागरूकता फैलाने का प्रण लेते हैं।

– नवी मुंबई (महाराष्ट्र)

वात्सल्य मूर्ति पूज्य स्वामी सत्यमित्रानंद जी

– गोपाल माहेश्वरी

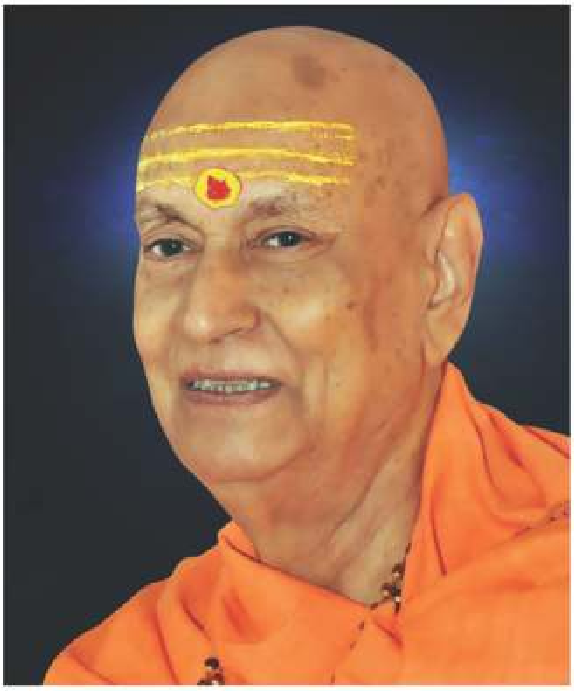

मई मास वर्ष २००८। अवसर था उज्जैन में माधव सेवा न्यास द्वारा संकल्पि भव्य भारत माता मंदिर के निर्माण स्थल पर भूमिपूजन का। हरिद्वार के भारतमाता मंदिर के अधिष्ठाता निवर्तमान शंकराचार्य पूज्यपाद स्वामी श्री. सत्यमित्रानंद गिरी जी महाराज के पावन सान्निध्य में, संघ स्वयंसेवकों एवं अनेक गणमान्य नागरिकों की उत्साहमयी उपस्थिति में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ भूमिपूजन विधि सम्पन्न हुई। प्रान्त के तत्कालीन सह संघचालक के रूप में श्री कृष्णकुमार जी अष्ठाना के साथ मंचस्थ स्वामीजी के मुखारविन्द से अमृतप्रवचन की गंगा प्रवाहित थी। अचानक स्वामीजी को देवपुत्र का स्मरण हो आया और उनके उद्गार फूट पड़े **''मैं जब भी कभी अवकाश मिलता है देवपुत्र पढ़ता हूँ। इसमें बच्चों को संस्कार देने वाली इतनी बातें होती है कि मेरा मानना है हर अभिभावक को चाहिए कि वह बच्चों को ऐसी पत्रिकाएँ पढ़ने को दें।''**

स्वामीजी जैसे उच्चकोटि के विद्वान परिव्राजक के मुँह से एक बाल पत्रिका का ऐसा मूल्यांकन सार्वजनिक मंच से प्रकट करना उनका अमोघ आशीष ही है। हम श्रद्धावनत है उनके श्रीचरणों में।

श्री गुरुजी जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में देवपुत्र का 'श्रीगुरुजी अंक' निकला। सामान्य से डेढ़ गुना अधिक संख्या में प्रकाशित इस अंक को स्वामी जी ने **'एक संग्रहणीय ग्रन्थ'** कहकर प्रोत्साहित किया। मेरा सौभाग्य यह है कि देवपुत्र के संपादन विभाग में सहयोगी स्वीकृत होने के बाद का यह पहला विशेषांक था।

मा. अष्ठाना जी से तो स्वामीजी के स्वदेश के युग से ही अनन्य संबंध रहे। भाईसाहब के स्वदेश कार्यालय के ऊपरी तल पर स्थित आवास पर स्वामीजी का पदार्पण भी हुआ था। भाईसाहब के

'देवपुत्र' के चयनित संपादकियों का संग्रह 'खिलते फूलों से' स्वामीजी ने ही पूज्य स्वामी अवधेशानंद जी गिरी के साथ दशहरा मैदान की विराट धर्मसभा में विमोचित किया था।

एक बार स्वामीजी की अपने चयनित भक्तों के साथ अनौपचारिक भेंट में श्री. अष्ठानाजी भी उपस्थित थे। ''रुकिए, मुझे देवपुत्र के लिए कुछ देना है। और अपने सहायक को संकेत किया। सहायक ने उन्हें ससंकोच उस समय चेक-बुक न होने की सूचना दी। स्वामी जी ने पाँच हजार देने का मन बनाया था। फिर अपने पास से ५०-५० के दो नोट निकाले और भाई साहब (श्री. अष्ठाना जी) को देते हुए कहा- ''अभी तो ये रखिए शेष हरिद्वार से भेजूँगा।''

और हरिद्वार से कुछ ही दिन में ग्यारह हजार का चेक प्रसाद स्वरूप प्राप्त हुआ। पचास-पचास के उन दो नोटों में से एक देवपुत्र में और एक निजी तौर पर अष्ठाना जी के पास सादर सुरक्षित रहा।

ऐसा ही एक प्रसंग डॉ. विकास दवे ने सुनाया था। जब देवपुत्र के आवरण पर भारतमाता मंदिर हरिद्वार का चित्र प्रकाशित किया गया था। पूज्य स्वामीजी ने तब भी देवपुत्र को अपना विशेष आशीर्वाद देकर अनुग्रहीत किया था।

इन सभी अवसरों पर उनसे न तो पूर्व चर्चा हुई थी न ही ऐसा करने का निवेदन। लेकिन संत तो सदैव ही अहेतु कृपालु होते हैं। ऐसे उदारमना संत शिरोमणि एवं अब तो श्री. अष्ठाना जी को भी भौतिक स्वरूप से न देख पाने की कसक मन में सदैव रहेगी।

सादर प्रणामांजलि।

– इन्दौर (म. प्र.)

बौद्धिक क्रीडा

पहेलियाँ

बूझो तो जानें

१) गर्मी में विश्राम न करता,
सर्दी में स्थिर रहता।
उल्टा छत से लटके रहता,
मुँह से कुछ न कहता।।

२) धूल उड़ाती, पेड़ झुकाती,
इधर-उधर वह आती जाती।
धीमी कभी, कभी तेज वह,
चले निरंतर नजर न आती।।

३) खाने को दे तो चिल्लाती,
नहीं दे तो चुप रहती।
खाती-खाती शोर मचाती,
ना जाने क्या कहती।।

४) है पहाड़ से सागर-तट तक काया।
चले निरंतर बड़ी अनोखी माया।।

५) ऐसी काली भयंकर।
असंख्य हीरे बेअसर।।

– चैनराम शर्मा
– उदयपुर (राजस्थान)

उत्तर देखो दर्पण में

१) पंखा २) हवा ३) चक्की ४) नदी ५) रात

विश्राम धाम

– सुधा भार्गव

एक राजा बड़ा ही चतुर था। अधिकांश वह रात में प्रजा के हालचाल जानने को अकेला ही निकल पड़ता लेकिन वेश बदलकर ही जाता। वेश बदलने में भी बड़ा कुशल, कभी ग्वाला बनकर जाता तो कभी चूड़ियाँ बेचने का स्वाँग रचता। भरे बाजार में आवाज लगाने लगता– ''दूध ले लो दूध। चूड़ियाँ ले लो– रंग बिरंगी चूड़ियाँ।'' इससे राजा की पाँचों अँगुलियाँ घी में ही रहतीं। प्रजा अपने राजा को पहचान भी नहीं पाती और वह उसके सामने ही आपस में हँसते–खिलखिलाते दिल की बात उगल देती। यहाँ तक कि राजा की अच्छाइयाँ और बुराइयों को कहने से भी न चूकती।

एक दिन राजा लौटते समय रास्ता भूल गया। अब तो वह चलते–चलते अपने राज्य से बहुत आगे निकल गया। दूर से उसे टिमटिमाती रोशनी दिखाई दी। एक क्षण को उसे लगा– सूरज झाँकते हुए उसकी हँसी उड़ा रहा है– ''बड़े राजा बनते हो। रास्ता तक तो याद नहीं रख सकते! प्रजा की भलाई के काम कैसे याद रहेंगे!''

फिर भी बड़ी आशा से रोशनी के सहारे थके पैर उसी ओर बढ़ने लगा। पास आने पर पता लगा वह तो दीपक की रोशनी है। हैरत से देखता ही रह गया। बुदबुदा उठा– ''इतनी रात गए, झोंपड़ी के आगे जलता झिलमिलाता दीपक! इसका क्या काम!''

तभी एक बूढ़ी लालटेन लिए निकली और बोली– ''आओ–आओ बेटा, अंदर आओ।''

''माँ, यह दीपक किसके लिए जला रखा है। रात होने पर तुम तो अंदर सो जाती हो।''

''बेटा, यह मेरे लिए नहीं तुम जैसे भूले भटके राही के लिए है। जिससे उन्हें पता लग जाय यहाँ एक कुटिया भी है जहाँ उनका हमेशा स्वागत है। यदि दीपक न रखा होता तो न जाने कहाँ–कहाँ चक्कर लगाते रहते। भूख–प्यास तुम्हें अलग सताती।''

''तुम्हारी झोंपड़ी तो बहुत सुंदर है। फल–फूलों से लदे पेड़–पौधों छतरी की तरह उस पर तने हैं। झोंपड़ी पर तो एक तख्ती भी लटकी है।''

''अरे बेटा! मेरा पोता हैं न सरजू! बड़ा चंचल है। सारे दिन बंदर की तरह कूदता फाँदता रहता है। उसी ने तख्ती लटका दी होगी।''

''इस पर तो कुछ लिखा है। हाँ, विश्राम धाम लिखा है।''

''हाँ–हाँ! फिर देरी क्या है! अंदर आराम करके हल्के हो जाओ। कुछ खाओ–पीओ। थकान से तुम्हारा चाँद–सा चेहरा एकदम मुरझा गया है।''

''अरे सरजू! बाहर निकलकर आ। और हाँ, पानी भरी लुटिया भी उठा ला। मेहमान जी के हाथ–पैर धुलाने हैं।''

खरगोश सा फुदकता सूरज आया और लुटिया राजा के हाथ में थमा दी। बोला– ''महाराज! पहले अपनी धूलभरी–जूतियाँ तो उतारो। वरना भीग जाएँगी, भीग गईं तो खराब हो जाएँगी, खराब हो गईं तो कल तुम इन्हें पहनकर कैसे जाओगे ?''

एक क्षण को तो राजा घबरा गया कि कहीं इस बच्चे ने उसे पहचान तो नहीं लिया। उसकी घबराहट देख बूढ़ी माँ बोली ''बेटा, इसकी बात पर न जा। मेरा पोता बहुत बड़ा नाटकबाज है।''

वृद्धा ने बड़े प्यार से राजा को आसन पर बैठाया और सूरज ने भोजन की थाली उसके सामने लाकर रख दी। राजा को भोजन बहुत स्वादिष्ट लगा। उसमें उसे अपनी माँ के हाथों की महक लगी। डकार लेकर उठ खड़ा हुआ।

''अरे! कहाँ चले ? अपनी दाईं तरफ दीवार पर तो जरा देखो।'' सूरज कमर पर दोनों हाथ टिकाए बड़े रौब से बोला। राजा ने नजर दौड़ाई। लिखा था–

जाने से पहले कोई निशान न छोड़ो।''

''कुछ समझे?''

राजा ने– ना मैं गर्दन हिला दी।

''तुमने खाना खाया?'' सूरज ने पूछा।

''हाँ खाया!''

''खाया तो खाया, रोटी–चावल थाली से बाहर भी गिराया! यह सब छोड़कर कहाँ चले?''

राजा ने नीचे देखा। सोचने लगा– ''यह लड़का तो बहुत शातिर है। इसका वश चले तो उड़ती चिड़िया भी पकड़ ले।'' उसने चुपचाप नीचे गिरे चावल–रोटी के दाने थाली में डाले। थाली बर्तन माँजने के स्थान पर रखी और आसन कील पर टाँग दिया। उसने जूती पहनने को उसमें पैर डाला ही होगा कि लड़के ने फिर टोक दिया– ''कहाँ चले? जाने से पहले सोने का स्थान तो देखते जाओ।''

राजा चारपाई के आगे खड़ा तो हो गया पर परेशान–सा सिर खुजाने लगा।

पीछे–पीछे लड़का जा पहुँचा– ''महाराज, कुछ समझे?''

राजा ने इस बार भी ना में अपना सिर हिला दिया।

''तुम चारपाई पर सोये थे?''

''हाँ!''

''चादर पर पड़ी सलवटें देख रहे हो!''

''हाँ!''

''सोये तुम तो चादर ठीक कौन करेगा?''

''मैं!'' राजा तुरंत बोल उठा।

''और यह गीला अंगोछा! चारपाई पर।'' सूरज ने अपनी आँखें घुमाईं।

''हटाता हूँ, हटाता हूँ।''

''अब तो तुम सब समझ गए।''

''हाँ मेरे गुरू, सब समझ गया और पाठ याद भी हो गया–जाने से पहले कोई निशान न छोड़ो। अब

तो जाऊँ, उत्तीर्ण कर दिया।''

लड़का जोर से हँसा। विश्राम धाम गूँज उठा।

दादी दौड़ी आई– ''उपद्रवी, फिर कुछ कर बैठा क्या?''

''माई जी, आपका पोता बुद्धि बाँट रहा था और मैं बटोर रहा था।'' राजा मुस्कुराने लगा।

''अरे बेटा! अभी से इसका यह हाल है तो बड़े होकर न जाने क्या होगा। गलती से यह मेरे घर में पैदा हो गया। इसे किसी ऋषि–मुनि की संतान होना चाहिए था।''

''अब भी देरी कहाँ हुई? इसे मैं अपने साथ ले जाता हूँ। खूब खिलाऊँगा–पढ़ाऊँगा।''

''मैं क्यों जाने लगा तुम्हारे साथ? मेरी दादी ही मेरे लिए ऋषि–मुनि हैं। उसने जो मुझे पढ़ाया वह मैंने तुम्हें पढ़ा दिया। तुम्हें बच्चों को पढ़ाने का ही शौक है तो यहाँ विद्यालय खोल दो। सबसे पहले मैं उनको अपना काम स्वयं करने का पाठ पढ़ाऊँगा। तुम तो न जाने किस विद्यालय में पढ़े हो कि अब तक अपने हिस्से का काम समझ ही नहीं पाते।'' सूरज ने मुँह बनाया।

राजा को सरजू की बातों में बड़ा आनंद आ रहा था। वह अपने साथ सरजू को तो नहीं ले जा सका पर उसे और उसकी बातों को कभी भूल न पाया।

– बैंगलूरू (कर्नाटक)

हमारे बारे में हम बताएं...

दुनिया उल्टी पुल्टी

रानी दुर्गावती की अमर गाथा

– साक्षी रोकड़े कक्षा १२वीं

पात्र परिचय

रानी दुर्गावती (बालिका एवं युवावस्था)

मंत्री, सूत्रधार, दीवान आदित्य, दस-पंद्रह गोण्डवाना सैनिक, दूत, दलपत शाह, दायी माँ, रानी दुर्गावती का पुत्र, आसफ खान, पंद्रह मुगल सैनिक, कुछ अन्य लोग।

दृश्य क्रमांक ०१

सूत्रधार– भारत की धरती... यह केवल मिट्टी नहीं। यह उन असंख्यों वीरों की सांसों से बनी हुई भूमि है, जिन्होंने अपने प्राणों से इसकी रक्षा की।

आइए चलते हैं १६वीं सदी के गोंडवाना की ओर जहाँ जन्म लिया था उस बालिका ने, जिसमें बचपन से ही हिम्मत खून बनकर दौड़ती थी समय था ५ अक्टूबर १५२४–

जब भी धरती लहू माँगे, कोई दुर्गा रूप बने,
कभी तलवार लिए बेटी, माँ भारती की धूप बने।
इतिहास के पन्नों में जो, तेजस्वी दीप जलाती है,
वो गोंडवाने की शेरनी रानी दुर्गावती कहलाती है।

दृश्य ०२

(मंच पर जंगल का दृश्य। शेर की दहाड़। दुर्गावती युवा अवस्था में शिकार पर निकली हुई।)

दुर्गावती– (हँसते हुए) ये जंगल ये पहाड़ ये मेरी दुनिया है। यदि मैं डर गई तो कैसे बनूँगी गोंडवाना की रक्षक?

दीवान आदित्य– राजकुमारी, आपके पिता चिंतित रहते हैं आप हर बार अकेली शिकार पर निकल आती हैं।

दुर्गावती (धनुष तानते हुए)– जिसे अपने लोगों की रक्षा करनी हो, उसे पहले स्वयं निर्भीक होना पड़ता है, आदित्य! देखो शेर सामने है तुम केवल देखना गोंडवाना की बेटी तीर कैसे चलाती है।

(शेर की आवाज। दुर्गावती तीर चलाती है। शेर गिरता है।)

दीवान आदित्य– अद्भुत! राजकुमारी, आप जन्मजात योद्धा हैं।

दुर्गावती– नहीं आदित्य में केवल अपने भाग्य की तैयारी कर रही हूँ। जो आने वाला है वो मुझसे कुछ बड़ा चाहता है।

दृश्य क्रमांक ०३

सूत्रधार– बचपन की सीख तलवारों की लोरी।
तलवारों की झंकारें ही, उसकी पहली लोरी थीं,
घोड़ों की टापें बन जातीं, बचपन की कोई कहानी थीं।
धनुष-बाण उसके साथी थे, ढाल थी उसकी सहेली,
वीरता की राहों पर चलना, थी उसकी पहली खेली।

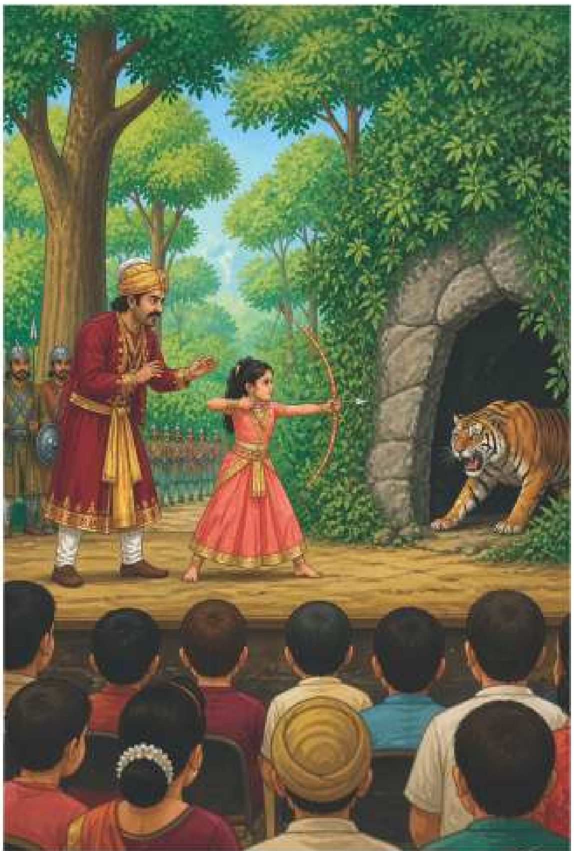

दृश्य क्रमांक ०४

महारानी दुर्गावती युवावस्था में, अश्व पर सवार, युद्ध पोशाक में प्रकट होती हैं। उनके पीछे दस-बारह सैनिक।

मंत्री (घबराकर)- राजकन्या, इस अँधेरी रात में हथियारों का अभ्यास? अभी तो आधा राज्य निंद्रा में सोया है। आप तो प्रात:काल से ही रणभूमि की भाँति परिश्रम कर रही थीं। कृपया कुछ विश्राम कर लें।

दुर्गावती- मंत्रीवर, जो राजकन्या रात को सो जाए, वह सुबह अपने राज्य को रोते हुए जागता देखती है। युद्ध का शोर पहले पवन में सुनाई देता है फिर सीमा पर और अंत में राजदरबार के भीतर। मैं पवन को अनसुना नहीं कर सकती।

सैनिक ०१- देवि! आपके साथ अभ्यास करना तो हमारे जीवन का सौभाग्य है। परंतु आप थक जाएँगी।

दुर्गावती- जो राजा या रानी थक जाए उसकी प्रजा दुर्बल हो जाती है। मैं जन्म से वीरांगना नहीं हूँ मैंने स्वयं को युद्ध के लिए गढ़ा है। और तुम सब भी गढ़े जाओगे। क्योंकि गढ़-मंडला की धरती लकड़ी की भाँति नहीं- इस्पात की भाँति योद्धा पैदा करती है।

मंत्री- क्या आपको नहीं लगता कि हवा की दिशा बदल रही है? सन्नाटा आज कुछ अलग है जैसे कोई तूफान आने को है। मुझे लगता है मुगलों के कदम इस दिशा में बढ़ रहे हैं। देवि, यह केवल आपकी आशंका या भ्रम हो सकता है। हमारी सीमाएँ सुरक्षित हैं।

दुर्गावती- राज्य तभी सुरक्षित होता है, जब शत्रु कमजोर हो। और मुगल कमजोर नहीं हैं। उनकी महत्वाकांक्षा की कोई सीमा नहीं। वे भूमि नहीं लेते आत्मसम्मान छीन लेते हैं।

सैनिक ०२- देवि! यदि वे आए तो हम उनके प्रहार को रोक देंगे।

दुर्गावती- रोकना पर्याप्त नहीं, वीर। युद्ध में जीतने का अर्थ केवल शत्रु को हराना नहीं बल्कि अपनी आत्मा को अखंड रखना है। धरती पर जन्म लेने वाले योद्धा, राज्य के लिए लड़ते हैं; परन्तु रानी वह तो राज्य की माँ होती है। माँ अपनी संतानों को किसी के आगे झुकने नहीं देती।

दुर्गावती- आने दो तूफान को! देखेंगे कि गढ़-मंडला की व्याघ्र-नारी, कितने तूफान झेल सकती है। और यदि युद्ध आ ही जाए तो मैं अपनी प्रजा के आगे ढाल बनकर खड़ी रहूँगी। याद रखना- युद्ध तलवार से नहीं संकल्प से जीता जाता है।

सैनिक ०३- हम सब तैयार हैं, देवि! आपका आदेश मिले, तो हम प्राण देकर भी इस भूमि को बचा लेंगे।

दुर्गावती (सैनिकों की ओर मुड़कर)- प्राण

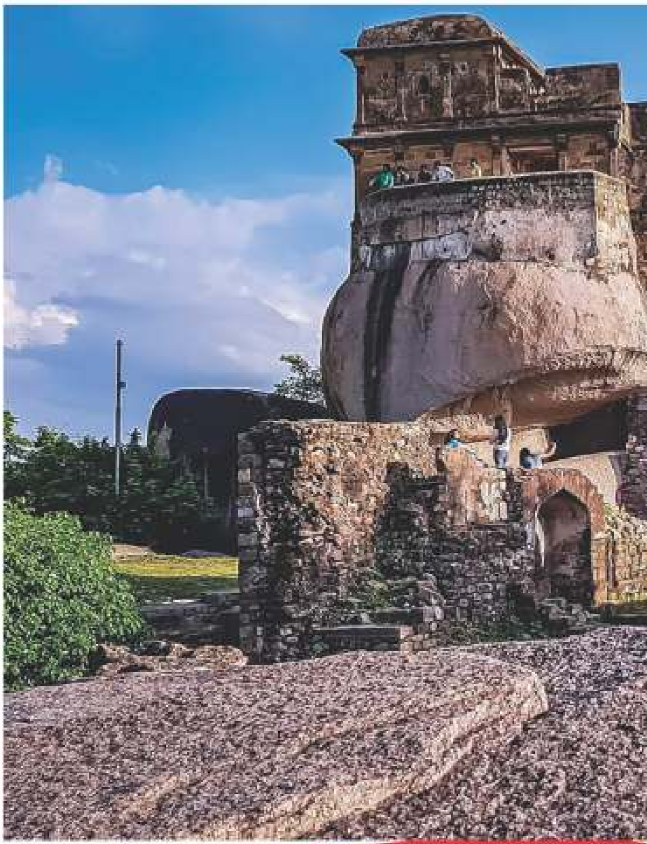

देना सरल है, वीरो। प्राण देना तो कुछ पलों का साहस माँगता है– परन्तु राज्य की रक्षा करना हर पल जागरण माँगता है, हर साँस में चौकन्ना रहना पड़ता है। आज से तुम सब केवल सैनिक नहीं–गढ़–मंडला की आत्मा हो और वह रानी तुम सबकी ढाल और तलवार दोनों है।

मंत्री– देवी! आपकी वाणी में आज कुछ अग्नि–सी है। क्या आपको भविष्य की कोई आहट सचमुच सुनाई दे रही है ?

दुर्गावती (गंभीर, दृढ़ स्वर में)– हाँ मंत्री, और वह आहट मैं वर्षों से सुन रही हूँ– जब से भारतवर्ष की धरती पर मुगलों ने अपना झंडा गाढ़ना शुरू किया है। वे केवल प्रदेश जीतते हैं हमारा स्वाभिमान भी जीतना चाहते हैं। परन्तु गढ़–मंडला का स्वाभिमान, तलवार की धार पर जन्मा है। और तलवार की धार पर ही मरना स्वीकार करेगा।

दृश्य क्रमांक ०५

सूत्रधार–

समय बदला, ऋतुएँ बदलीं,
और आया शुभ अवसर वो,
दलपत शाह बने जीवन साथी–
भाग्य ने रचा प्रहर वो।
गोंडवाना का मुकुट सजा
जब रानी के सिर पर,
खुशियाँ खिल उठीं धरती पर,
जैसे बसंत आया घर पर।

दृश्य क्रमांक ०६

(गूँजते हुए नगाड़े। स्वर्ण स्तंभ। राजकाज की गंभीरता से भरा वातावरण।)

(महारानी दुर्गावती अभी युवावस्था में हैं। दरबार सज चुका है। मंत्री, राजकुमारियाँ, रक्षाधिकारी, सबके चेहरे पर उत्सुकता।)

मंत्री– राजकन्या, कछवाहा वंश के वीर युवराज दलपत शाह, आपसे विवाह का प्रस्ताव लेकर उपस्थित हुए हैं। वे आपके दर्शन के इच्छुक हैं।

दुर्गावती– वीरता ही कछवाहों की पहचान है। किन्तु विवाह कोई कुंडली का मेल नहीं– यह तो जीवन की सह–यात्रा है। युवराज की युद्ध–कला, उनके नीतिशास्त्र, और उनकी आत्मा की सच्चाई सबका परीक्षण आवश्यक है।

मंत्री– देवि! वे आपकी समानता के योग्य प्रतीत होते हैं। किन्तु निर्णय आपका है।

(दलपत शाह गर्व और विनम्रता लिए दरबार में प्रवेश करते हैं। उनके चेहरे पर आस्था और साहस दोनों झलकते हैं।)

दलपत शाह– जय हो गढ़–मंडला की भवानि! मैं आपको प्रणाम करता हूँ।

दुर्गावती– युवराज! आपकी वीरता के किस्से मैंने सुने हैं पर सुनी हुई बात और यर्थात दोनों में अंतर

होता है।

दलपत शाह– रानी! मैंने कोई युद्ध इसलिए नहीं जीता कि मेरे लिए गीत गाए जाएँ, मैंने हर युद्ध अपनी प्रजा की रक्षा के लिए लड़ा है।

दुर्गावती– और क्या आप अपनी प्रजा की रक्षा के साथ मेरी प्रजा की रक्षा का भार भी उठा सकेंगे?

दलपत शाह (गर्व से)– यदि आप साथ हों, तो मैं संसार के किसी भी साम्राज्य से टकराने को तैयार हूँ।

दुर्गावती (तलवार उठाते हुए)– तो फिर परीक्षा! वे तलवार है– और वहाँ (चिन्हित करती हैं।) हमारी रणभूमि। आइए, देखते हैं कि आपका संकल्प कितना दृढ़ है।

(दोनों का शस्त्र–प्रदर्शन। तलवारों की टंकार। परस्पर सम्मान। अद्भुत नृत्य–समान युद्धाभ्यास।)

दलपत शाह (हाँफते हुए, पर सम्मान में झुककर)– देवी! आपकी वीरता मेरे हृदय को नत कर देती है। आपसे श्रेष्ठ जीवन–संगिनी मुझे नहीं मिल सकती।

दुर्गावती (मुस्कान के साथ)– और मेरे लिए वह पुरुष योग्य है जो शक्ति से नहीं सम्मान से युद्ध करता है।

दृश्य क्रमांक ०७

सूत्रधार–

लेकिन भाग्य कहाँ ठहरता,
दुख की धारा बहती है,
लेकिन भाग्य कहाँ ठहरता,
दुख की धारा बहती है,
दलपत शाह चल बसे,
रानी की दुनिया ढहती है।
पुत्र था कोमल, छोटा–सा
ममता का था आधार,
पर रानी बोली– राज संभालूँगी,
रखूँगी प्रजा का प्यार।

दृश्य क्रमांक ०६

दलपत शाह की मृत्यु

(शोक का वातावरण। श्वेत वस्त्र। बाँसुरी की करुण धुन।)

(दुर्गावती सिंहासन पर स्तब्ध बैठी हैं। दाई माँ आँखों में आँसू लिए खड़ी हैं।)

दाई माँ (आँसू बहाते हुए)– देवि आपके प्राण प्रिय दलपत शाह, अब इस संसार में नहीं रहे। वे आपको अकेला छोड़कर चले गए, माँ।

दुर्गावती (गहरी, भेदती हुई आवाज में)– अकेला? नहीं दाई माँ! रानी कभी अकेली नहीं होती। रानी का हर श्वास उसकी प्रजा की धरोहर होता है।

मंत्री (करुणा से)– देवि! हम सब आपके साथ हैं। परन्तु आगे का मार्ग कठिन है। राजकुमार अभी बालक हैं। राज्य को नेतृत्व चाहिए।

दुर्गावती (कठोरता से)– यदि नदी को बाँध मिल जाए तो वह मार्ग खोज लेती है। मैं इस राज्य की

माता हूँ और माता कभी दुर्बल नहीं होती।

दाई माँ– पर देवि, आप रो भी तो सकती हैं व्यथा को बाहर आने दीजिए।

दुर्गावती (आँखें बंद करते हुए)– रोना, जब तलवार गिर जाए तो रोते हैं। जब कर्त्तव्य टूट जाए तो रोते हैं। पर जब कोई रानी अपने पति को खो देती है वह आँसू नहीं बहाती बलिदान का संकल्प लेती है।

मंत्री– तो आपका आदेश?

दुर्गावती– मेरे पुत्र को राजगद्दी का उत्तराधिकारी घोषित किया जाए। परंतु राज्य–चक्र का संचालन युद्ध, राजनीति, निर्णय–सब मैं संभालूँगी।

सभी लोग– जय हो महारानी दुर्गावती।

दृश्य क्रमांक ०९

सूत्रधार–

जब रानी ने गद्दी थामी, धरती फिर से खिल उठी,
नदियाँ बोलीं हम बहते हैं, फसलें बोलीं हम मिलते हैं।
तालाबों में जल बढ़ा, जंगल खुशियों से भर आए,
प्रजा बोली हमारी माँ ने, राज्य हमारे फिर सजवाए।
मुगल का बादल और तूफान की आहट
पर उत्तर से मुगल बढ़े थे, लोभ और अहंकार लिए,
आसफ खान चला था लेकर, ताकत का पहाड़ लिए।
रानी ने खतरा पहचाना रणभूमि सजने वाली थी,
धरा गवाही दे रही थी एक महागाथा आने वाली थी।

दृश्य क्रमांक १०

(दरबार में तनाव। सबके चेहरे पर क्रोध और चिंता।)

दूत– देवि, मुगल सेनापति आसफ खान ने यह संदेश भेजा है– कि गढ़–मंडला को मुगल सल्तनत में सम्मिलित कर दिया जाए। अन्यथा तलवार से वार्तालाप होगा।

मंत्री– धृष्टता! यह हमारी स्वतंत्रता पर सीधा प्रहार है।

दुर्गावती (तलवार उठाती हैं)– धृष्टता नहीं यह हमारी परीक्षा है। जब शत्रु तुम्हें झुकने को कहे तो जान लो कि वह तुम्हारी शक्ति से भयभीत है।

दूत– देवि! क्या उत्तर पहुँचा दूँ?

दुर्गावती (अत्यंत कठोर स्वर में)– लिखो– गढ़–मंडला की रानी दुर्गावती अपने राज्य को अपनी तलवार से बचाना जानती है। युद्ध ही उत्तर है।

दृश्य क्रमांक ११

सूत्रधार–

पहला युद्ध गया जब छिड़, रानी गर्जना कर बैठी थी,
भाला, ढाल, अडिग नयन, जैसे बिजली की रेखा थी।
मुगलों ने देखा आश्चर्य स्त्री ये कैसी ज्वाला है?
रानी के एक–एक प्रहार में, जंग जीतने की माला है।
पहला आक्रमण टूटा, दुश्मन पीछे लुढ़क गया,
वीरों की आवाजों से, गोंडवाना फिर गूँज गया।
नरई की घाटी में रण था, जैसे फिर से कुरुक्षेत्र हुआ,
तलवारें गाती थीं गाथा, प्रतिशोध का प्रचंड नेत्र हुआ।
पर बदले की आग लिए, फिर आया आसफ खान,
हजारों सैनिक, भारी तोपें, और क्रूरता का विराम।
रानी का पुत्र वीरनारायण शेर की तरह लड़ा रण में,
मगर वीरगति पा बैठा, माँ के आशीष–ग्रहण में।
रानी हुईं घायल भीषण भाले, तीर, तलवारों से,
पर रानी की आँखें चमकीं, अब भी जलते अंगारों से।

दृश्य क्रमांक १२

(रणभूमि का उन्माद। योद्धाओं की गर्जना। आसमान में धूल और धुआँ।)

दुर्गावती (वीरों को संबोधित करके)– वीरो! आज हमारी तलवारों की चमक इतिहास की आँखों में समा जाएगी। शत्रु संख्या में अधिक है– परन्तु हमारी धरती, हमारा स्वाभिमान, हमारी धड़कनें– शत्रु से कई गुना अधिक हैं।

सैनिक ०१– देवि! हम प्राणों की बाजी लगा देंगे।

दुर्गावती– नहीं, प्राण मत गँवाना उन्हें जीत के लिए बचाकर रखना। गिरना बहुत सरल है, वीरों, परंतु जिंदा रहकर राज्य की रक्षा करना सबसे कठोर धर्म है। (दूर से मुगल सेना का कोलाहल गूँजता है।)

आसफ खान (घमंड से)– रानी! तुम्हारी सेना कम है, तुम्हारी शक्ति कमजोर है, तुम्हारा अंत निश्चित है!

दुर्गावती (दहाड़कर)– कमजोर? जो रानी अपनी प्रजा के लिए तलवार उठाती है वह कभी कमजोर नहीं होती!

(भयंकर युद्ध आरंभ। तीरों की वर्षा। तलवारों की टंकार। युद्ध की चीखें।)

दुर्गावती (घोड़े पर खड़ी होकर)– वीरो! आगे बढ़ो हर वार में धरती माँ का आशीर्वाद है।

(मुगल सेना पीछे हटने लगती है।)

आसफ खान (हैरान)– यह रानी नहीं.. .ये तो रणचंडी है!

दृश्य क्रमांक १३

सूत्रधार–

रानी ने देखा क्षितिज पर, काला मेघ छाया है,
परन्तु उसकी आँखों में, अटल साहस समाया है।
रानी बोलीं भागूँगी तो इतिहास मुझे क्षमा न करेगा,
युद्धभूमि में गिरूँ तो, मेरा धर्म अमर रहेगा।
सैनिक बोले– रानी अब लौटें, घाव बहुत गंभीर हैं,
रानी हँसकर बोलीं मेरे घाव में श्रृंगार हैं।
हार नहीं मानूँगी मैं, जब तक साँसें चलती हैं,
आज यदि पीछे हट गई, तो सारी धरती जलती है।

दृश्य क्रमांक १४

(युद्ध का दृश्य। उसके बाद दुर्गावती घायल है। रक्त बह रहा है। सैनिक रो रहे हैं।)

सैनिक ०१ (रोते हुए)– माँ! आपको कुछ नहीं होने देंगे। हम अपनी जान दे देंगे।

दुर्गावती (कमजोर पर दृढ़ स्वर में)– नहीं युद्ध का धर्म भावुकता नहीं कर्त्तव्य है। रानी मुगलों की बंदी बन जाए मैं यह अपमान अपनी धरती को नहीं दूँगी।

सैनिक ०२– देवि! हम बचा लेंगे।

दुर्गावती– बचाना चाहो तो मेरे पुत्र को बचाओ राज्य को बचाओ मेरी प्रजा को बचाओ। एक रानी का जीवन राज्य से बड़ा नहीं होता।

दाई माँ (रोते हुए)– माँ! हम सब कैसे जिएँगे आपके बिना?

दुर्गावती (आकाश की ओर देखते हुए)– जिस धरती ने मुझे जन्म दिया उसी को अपनी अंतिम श्वास अर्पित कर रही हूँ। हे महादेव, मेरे देश को कभी पराधीन न होने देना। दुर्गावती अपने हृदय में खंजर उतार देती हैं। सब चीख उठते हैं।

सैनिक– महारानी!

आसफ खान (दूर से काँपते हुए)– ऐसा बलिदान इतिहास में नहीं देखा।

मंत्री– आज बुन्देलखंड ने अपनी माँ खो दी परन्तु उसकी शौर्यगाथा सदियों तक गाई जाएगी।

सभी सैनिक– रानी दुर्गावती अमर रहें! रानी दुर्गावती अमर रहें!!

दृश्य क्रमांक १५

सूत्रधार–

२४ जून की शाम आज तक हिंद की रगों में बहती है,
रानी की वीरता हर बेटी में दिव्य प्रेरणा कहती है।
अकबर तक ने नमन किया ऐसी रानी दुर्लभ होती है,
जो मृत्यु को भी दे चुनौती इतनी शक्ति विरली होती है।
आज भी जंगल पूछते हैं हमारी रानी कहाँ चली गई?
नदियाँ बहती पूछें वो शेरनी किन राहों में ढली गई?
धरती से उत्तर आता है वो मरी नहीं वो अमर हुई
नारी शक्ति का शाश्वत दीप बनकर,
समय की साँसों में उतर गई।'

– मूंदी (म. प्र.)

जानो अपने खून को

– डॉ. कमलेन्द्र कुमार

जब कभी भी हमारे शरीर के किसी भी अंग में ब्लेड, चाकू, या किसी नुकीली चीज लगती है या खरोंच लग जाती है तो हमारे उस स्थान पर लाल–लाल रक्त बहने लगता है और कुछ समय बाद रक्त का बहना बंद हो जाता है। जब भी रक्त की बात हमारे मन मस्तिष्क में आती है तो लाल रंग भी आ जाता है। क्या सभी जंतुओं के रक्त का रंग लाल होता है ? रक्त का रंग लाल ही क्यों होता है ? रक्त का कार्य क्या है ? रक्त बनता कैसे है ? रक्त जमता कैसे है ? आदि न जाने कितने प्रश्न आपके मन मस्तिष्क में आ रहे होंगे। तो आज एक आलेख के माध्यम से हम हर प्रश्न का उत्तर जानेगें।

रक्त को रुधिर, लहू, खून, लोहित, आदि के नाम से जानते हैं। रक्त हमारे शरीर का आवश्यक तरल पदार्थ है। हमारे रक्त का रंग लाल होता है परंतु सभी जीव जंतुओं के रक्त का रंग लाल नहीं होता है, कॉकरोच और टिड्डी के रक्त का रंग सफेद (उसके रक्त में हीमोग्लोबिन की कमी के कारण), घोंघा का रक्त नीला (रक्त में उपस्थित हीमोसायनिन के कारण) ऑक्टोपस का नीला (रक्त में तांबा की मात्रा अधिक होने के कारण) होता है।

हमारे रक्त का रंग लाल क्यों होता है ?

इस तथ्य को समझने के लिए हमें रक्त की संरचना को समझना होगा। हमारे रक्त के दो भाग हैं

१) रुधिर कणिकाएँ

२) प्लाज्मा

रुधिर कणिकाएँ तीन प्रकार की होती हैं–

१) लाल रक्त कणिकाएँ

२) श्वेत रुधिर कणिकाएँ

३) रुधिर प्लेटलेट्स

लाल रुधिर कणिकाओं को अँग्रेजी में Red Blood Corpuseles या R. B. C. कहते हैं। लाल रुधिर कणिकाओं में हीमोग्लोबिन नामक प्रोटीन पाया जाता जिस कारण मनुष्य का रक्त लाल होता है। इनका प्रमुख कार्य मानव शरीर में ऑक्सीजन और कॉबर्न डाई ऑक्साइड का परिवहन करना है।

श्वेत रक्त कणिकाएँ को सैनिक कणिकाएँ भी कहा जाता है। जब हमारे शरीर को हानिकारक जीवाणु, रोगाणु, परजीवी प्रभावित करता है तब श्वेत रक्त कणिकाएँ की संख्या में वृद्धि हो जाती है और हानिकारक जीवाणु, परजीवी का भक्षण कर उन्हें नष्ट देती हैं अत: ये कणिकाएँ किसी संक्रमण के प्रति रक्षक का कार्य करतीं हैं।

रुधिर प्लेटलेट्स का कार्य बहुत महत्वपूर्ण है।

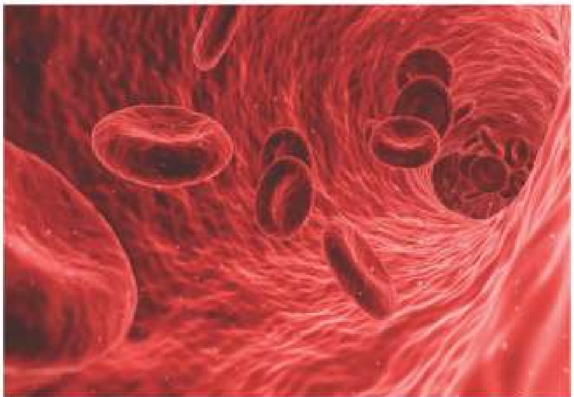

जब कभी भी हमें चोट लग जाती है तो रक्त निकलने लगता है रुधिर प्लेटलेट्स रक्त का थक्का बनाने का कार्य करती है, जिसके कारण रक्त का बहाव नियंत्रित हो जाता है।

प्लाज्मा हल्का पीला, साफ चिपचिपा तरल पदार्थ होता है। यह रक्त में ही पाया जाता है। यह एक तरल संयोजी ऊतक है जो शरीर में विभिन्न पदार्थों का परिवहन करता है।

रुधिर जमता कैसे है ?

बच्चो, जब कभी हमको चोंट लग जाती है जिससे रक्त नलिकाएँ फट जाती हैं और रक्त बहने लगता है, परंतु कुछ समय बाद रक्त गाढ़ा होने लगता है। चोट वाले स्थान पर एक पपड़ी जम जाती है और रक्त का बहना बंद हो जाता है।

रक्त का जमना एक निर्धारित प्रक्रिया के साथ सम्पन्न होती है। जब रक्त चोट युक्त नलिका से बाहर निकलता है और वायु के सम्पर्क में आता है तब रुधिर प्लेटलेट्स के विघटित होने से एक तत्व बनता है जिससे प्लाज्मा में उपस्थित फाई ब्रिनोजन नामक निष्क्रिय प्रोटीन फाइब्रिन में बदल जाता है। अनेक फाइब्रिन के रेशे क्षतिग्रस्त स्थान के ऊपर जाल के रूप में जम जाते हैं। इन रेशों में लाल रक्त कणिकाएँ और श्वेत रक्त कणिकाएँ उलझ जातीं हैं और थक्का बन जाता है जिससे रक्त का बहना बंद हो जाता है।

कभी-कभी दुर्घटना में अधिक चोंट लग जाने के कारण रक्त का बहाव अधिक हो जाता है जिससे रक्त के जमने की प्रक्रिया पूरी नहीं हो पाती जिससे लगातार रक्त निकलने से व्यक्ति के मृत्यु की संभावना बढ़ जाती है।

- जालौन (उ. प्र.)

भूल-भुलैया

द से दवाई

- चाँद मो. घोसी
मेड़ता सिटी (राजस्थान)

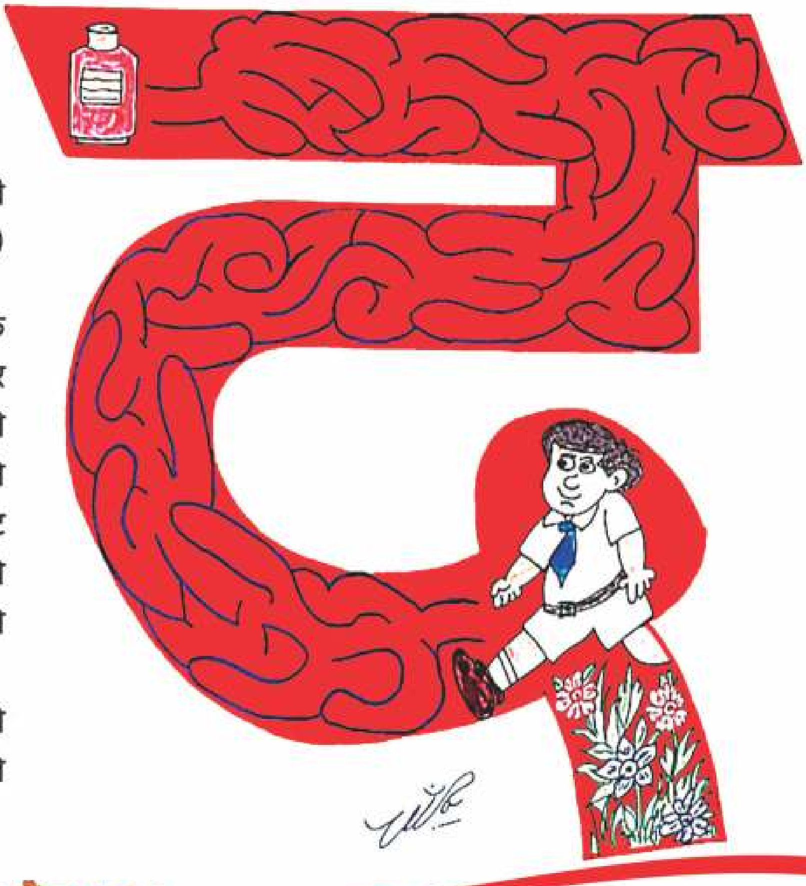

अपने बड़े भाई के विवाह के शुभ अवसर पर रामू ने पेट भरकर खूब नमकीन और विभिन्न प्रकार की मिठाई खाई। अत्यधिक भोजन खाने से उसका पेट खराब हो गया। पेट समस्या के निदान हेतु वैद्य जी ने उसे पीने की दवाई की एक शीशी दी। जो कुछ दूरी पर रखी हुई है।

प्रिय बच्चो! अब आप रामू को दवाई की शीशी के पास सही रास्ते से पहुँचा दीजिए।

लाल बुझक्कड़ काका के कारनामें

-देवांशु वत्स

मगरमच्छ भागा

– रजनीकांत शुक्ल

अजयराज की आयु अभी मात्र नौ वर्ष की है। उसका घर उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक ताज नगरी आगरा जिले में बाह के पास है। जहाँ वह झरनापुरा बासौनी गाँव में रहता और कुँवरखेड़ा की शाला में कक्षा चार का विद्यार्थी था। उसका गाँव चम्बल नदी के किनारे बसा हुआ है। छः वर्ष पहले उसकी माँ का बीमारी में निधन हो गया था। घर में उसकी बड़ी बहन काजल और छोटा भाई कुशाल रहते थे। कभी–कभी वह अपने पिता वीरभान उर्फ बंटू के साथ अपनी बकरियाँ चराने गाँव के पास बहने वाली चंबल नदी के किनारे चला जाता था। इस तरह अधिकांश उसका नदी के किनारे की ओर जाना होता रहता था। उस दिन २५ जुलाई २०२५ को भी वह अपने पिता वीरभान सिंह के साथ नदी की ओर बकरियाँ चराने गए हुए थे।

उस समय दिन के लगभग दो बजे थे कि उन्हें पानी की आवश्यकता अनुभव हुई तो वे नदी की ओर चल दिए। चंबल के पानी की विशेषता है कि इसका पानी बहुत साथ होता है और चंबल नदी के पानी में मगरमच्छ और घड़ियाल भी पाए जाते हैं।

यह बात सभी को पता है। मगर उस दिन न जाने कैसे लापरवाही हो गई। हुआ यूँ कि जैसे ही अजय के साथ गए वीरभान ने पानी लेने के लिए नदी में अंदर की ओर पैर डाला और बोतल भरने का प्रयास किया। तभी एकाएक पानी में जोरदार हलचल हुई।

तब तो उनके होश उड़ गए जब पानी में से एक मगरमच्छ उनकी ओर झपट पड़ा। इससे पहले कि पलटकर वे बाहर की ओर उससे बचने के लिए भागे मगरमच्छ अपने पंजों के सहारे भारी भरकम शरीर को चलाता हुआ एकदम उनके निकट आ पहुँचा। उसे यकायक अपने इतने निकट आया देखकर वीरभान ने अपनी पूरी शक्ति लगाकर वहाँ से पलटकर भागने का प्रयास किया। किन्तु उनका यह प्रयास जल के राजा के सामने सफल न हो सका और उसने पलटकर भागते हुए वीरभान के दाएँ पैर को अपने खतरनाक जबड़े में फँसा लिया।

यह सब इतनी तेजी से हुआ कि पास में ही खड़े नौ वर्ष के अजय को सँभलने का अवसर नहीं मिला। जब तक वह तेजी से हुए इस पूरे घटनाक्रम को समझ गया कि उसके पिता संकट में फँस चुके हैं। किन्तु फिर भी अजय ने तुरन्त परिस्थिति को समझा और जितनी तेजी से मगरमच्छ ने उसके पिता को अपने कब्जे में लिया उससे अधिक तेजी से उसने उन्हें बचाने का उपाय सोच लिया।

उस समय उसके हाथ में बकरियों को हाँकने के लिए लाठी थी। बस वह उसी को लेकर फुर्ती से आगे बढ़ आया और मगरमच्छ पर झपट पड़ा। इससे

पहले कि मगरमच्छ उसके पिता को खींचकर नदी के पानी में अन्दर की ओर ले जाए उसने मगरमच्छ के ऊपर उस लाठी से ताबड़तोड़ वार करना शुरू कर दिया। उसे यह अच्छी तरह से पता था कि अगर उसके पिता को मगर खींचकर पानी के अन्दर पहुँच गया तो उन्हें बचा पाना उसके लिए लगभग असंभव हो जाएगा।

बस यही सोचकर उसने मगरमच्छ के उस जबड़े पर लगातार हमले करना जारी रखा जिससे वह पिता के पैर को दबोचे हुए था। अजय के मन में यही भाव था कि किसी भी तरह से मगर उसके पिता को पानी में खींचकर न ले जा पाए। बस इसी प्रयास में उसने मगर के मुख पर अंधाधुंध आक्रमण करना जारी रखा। बिना यह सोचे कि मगर ने यदि पिता को छोड़, पलटकर उस पर आक्रमण कर दिया तो क्या होगा। उसे तो उस समय डरे बिना हर स्थिति में अपने पिता के प्राणों को बचाना था।

अगर अजय की लाठी का प्रहार मगरमच्छ के शरीर पर होता तो शायद उसे कोई फर्क नहीं पड़ता लेकिन उसके मुँह पर पूरी ताकत से पड़ने वाली चोटें उसे दर्द पहुँचा रही थीं। ऐसे में अजय की लाठी का जो प्रहार मगर की आँख पर पड़ गया तो उससे मगर दर्द से बिलबिला उठा। यह देखकर अजय ने फिर से उसी जगह आँख पर वार कर दिया। खुद को इस हमले से बचाने के लिए मगर को मजबूरी में अजय के पिता के पैर की पकड़ को कुछ ढीला करना पड़ा।

इससे उत्साहित होकर अजय ने उसकी आँख पर लगातार आठ दस वार लगातार कर दिए। जिससे घबराकर स्वयं को बचाने के लिए मगरमच्छ ने अजय के पिता के पैर को छोड़ा और स्वयं अपनी जान बचाने के लिए तेजी से पलटकर नदी के पानी में सरक गया। उसके अन्दर जाते ही अजय ने अपने पिता को सँभाला और नदी से दूर ले आया।

जब इस घटना की खबर लोगों को हुई तो

उन्होंने नन्हे अजय की तुरंत बुद्धि अदम्य साहस और विपरीत परिस्थितियों में धैर्य के साथ समस्या का समाना करने और उस पर विजय पाने के लिए उसकी सराहना की। जहाँ उच्च शिक्षा मंत्री और राज्य के मुख्य मंत्री जी ने उसके बहादुरी की प्रशंसा की। वहीं जिलाधिकारी आगरा ने अजय के साहस और चतुराई की तारीफ करते हुए अजय का नाम प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया।

उस दिन पूरा गाँव और अजय के शाला का एक–एक बच्चा झूम उठा जब देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी ने देश के अन्य चुने हुए बच्चों के साथ अजय को वीर बाल दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से देश की राजधानी दिल्ली के विज्ञान भवन में सम्मानित किया।

अजय और उसके पिता वीरभान के लिए यह बड़े ही गर्व के पल थे जब उन्हें देश के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री जी से मिलने और उनसे बात करने का अवसर प्राप्त हुआ।

नन्हे मित्रो !

बने मोतियों की माला, को जब जोड़े धागा
अंदर बहता जोश सभी के, कब जाए माँगा
आई जब सामने मुसीबत तब साहस जागा
आगे बढ़ हिम्मत की जो, मगरमच्छ भागा।

– नई दिल्ली

शोक का दिन

– महेश कुमार केशरी

आज अनूप भैया की दुकान का उद्‌घाटन था। अनूप भैया किराने की अपनी छोटी दुकान को छोड़कर एक बड़ी दुकान खोलने जा रहे थे। ज्ञानपुर एक छोटा–सा कस्बाई क्षेत्र था। लेकिन, धीरे–धीरे वहाँ भी शहरीकरण होने लगा था। स्थान–स्थान पर चाईनीज और मोमोज के काऊँटर, दिखने लगे थे। गाँव का गँवईपन धीरे–धीरे बाजारवाद की भेंट चढ़ने लगा था।

अनूप भैया की नई दुकान के सामने एक आम का पेड़ था। जिसके कारण अनूप भैया की नई दुकान दिखाई नहीं पड़ रही थी। जिसके कारण आज वह वर्षों पुराना और विशालकाय पेड़ कटने वाला था।

वैसे कस्बे के और लोगों के लिए वह एक पेड़ था। किन्तु दीप, गोलू और सुंदर के लिए वह पेड़ से अधिक उनका दु:ख–सुख का साथी था। इस पेड़ से उनकी घनिष्टता बचपन के सबसे प्यारे मित्रों की तरह थी। उनके लिए वह केवल पेड़ भर नहीं था। बल्कि पेड़ से भी अधिक ही कुछ था।

कस्बे के बच्चे उसी आम के पेड़ के नीचे वर्षों से खेलते आ रहे थे। गर्मियों की हर शाम और रविवार को छुट्टी के दिन वह वहाँ उस आम के पेड़ के नीचे गिल्ली–डंडा खेलते। नताशा, रेखा और उर्मि के झूला झूलने के अच्छे स्थानों में से वह भी एक स्थान था। गर्मियों में बच्चे दीपू, गोलू, सुंदर, नताशा, रेखा और उर्मि पेड़ से गिरे कच्चे–पक्के आमों को चुनकर नमक–मिर्च के साथ खाते। उसका जो स्वाद उन्हें मिलता उसके कहने ही क्या थे।

आज जब बच्चे शाला से पढ़कर लौटे तो देखा। पेड़ को किसी ने काट दिया है। और आम का पेड़ कटकर गिरा पड़ा है। हालाँकि, हरियाली वहाँ अब नहीं थी। पेड़ के अवशेष ही अब वहाँ बचे थे। इस घटना ने बच्चों को बहुत प्रभावित किया। लगा उनका ही कोई सगा अब नहीं रहा।

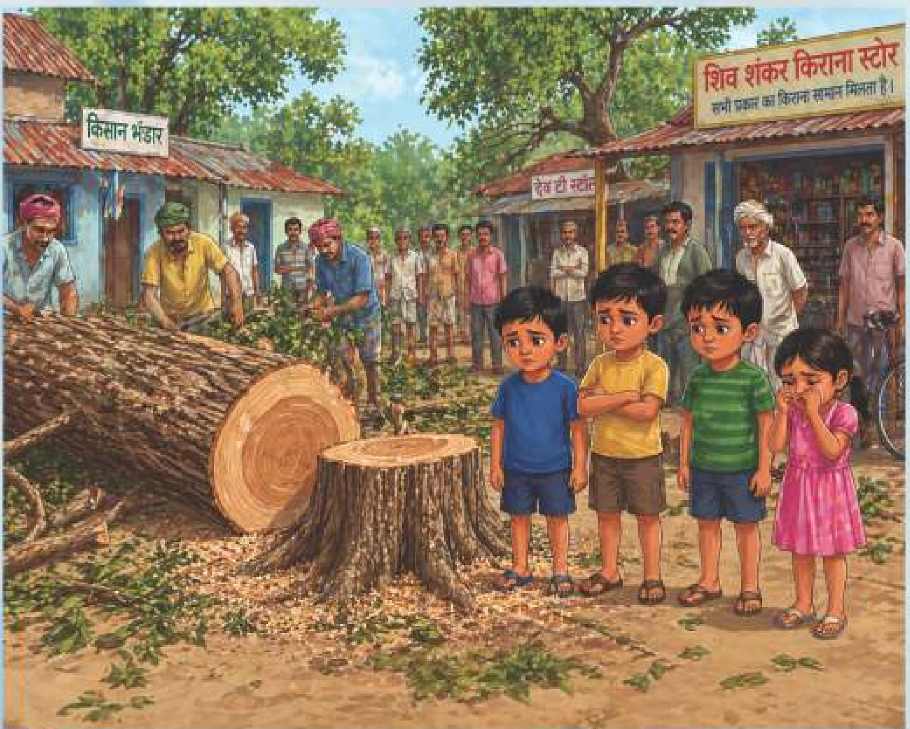

अनूप भैया बच्चों की मिठाई का पैकेट थमाते हुए बोले– ''लो बच्चो, आज मेरी दुकान का उदघाटन है, मिठाई खाओ।''

लेकिन, बच्चों ने कोई उत्साह नहीं दिखाया। उस दिन बच्चे खूब रोए। और सारा, दिन खाना भी नहीं खाया। अनूप, भैया के लिए वह खुशी का दिन था। लेकिन बच्चों के लिए वह शोक का दिन था।

– बोकारो (झारखंड)

बाल पहेलियाँ

– गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

१) लाल जीभ लप–लप लपकाए।
सूखी लकड़ी– कंडे खाए।
छूने चलो तो अंग जलाए।
पानी पीते ही मर जाए।

२) सब कहते हैं जुड़वां भाई।
पैरों में ही जगह है पायी।
कहीं एक साथी खो जाए।
दूजा कोई काम न आए।

३) सारे घर में धूम मचाऊँ।
बिल्ली मौसी से डर जाऊँ।
पुस्तक अथवा वस्त्र मिले,
मौज से कुतर–कुतरकर खाऊँ।

४) जोड़, घटाना, गुणा, भाग है।
मेरे बाएँ हाथ का काम।
कभी नहीं गलती करता हूँ।
मित्र! बताओ मेरा नाम।

५) बनी बुढ़ापे की साथी है।
धीरे–धीरे साथ चले।
कुत्तों को तो मार भगाती।
और किसी को नहीं खले।

६) एक से बारह तक गिन पाए।
चौबीस घंटे चलती जाए।
टिक–टिक टिक–टिक करती रहती।
बुद्धिमान जो नाम बताए।

७) दूर–दूर तक उड़कर जाए।
फूलों से रस लेकर आए।
घर में खूब मिठाई रखती।
स्वयं बेचारी रंच न चखती।

– लखनऊ (उ. प्र.)

उत्तर– १) आग। २) जूते। ३) चूहा। ४) कैलकुलेटर। ५) छड़ी। ६) घड़ी। ७) मधुमक्खी।

अशोक वन में महोत्सव

– डॉ. सतीश चन्द्र भगत

वनों में वनदेवी की पूजा होने वाली थी। अशोक वन में रहने वाले जानवर भी इस अवसर पर पूजा-महोत्सव मनाने के लिए एक स्थान पर एकत्रित हुए। उन्होंने सर्वसम्मति से शेरसिंह को संयोजक बनाया।

महोत्सव के अवसर पर सबसे पहले वनदेवी की पूजा हुई। इस दिन सभी बहुत प्रसन्न थे क्योंकि वन में पहली बार इस तरह का आयोजन हो रहा था। संयोजक शेर सिंह अपने आसन पर विराजमान थे और सामने सभी जानवर बैठे हुए थे।

शेर सिंह ने अशोक वन के साथियों से कहा– ''जानते हो ? हमारे वन के हाथी भाई अपनी सूंढ़ से बड़े-बड़े पेड़ों को एक झटके में जड़ सहित उखाड़ कर फेंक देते हैं।''

अपनी तारीफ सुनकर हाथी बहुत प्रसन्न हुआ।

तभी बंदर बोला– ''अरे भाई! ये हाथी तो बहुत ताकतवर जानवर है। लेकिन ये तो बताओ कि हाथी को क्या-क्या खाना पसंद है ?''

तभी भालू ने टपकते हुए कहा– ''हाथी को गन्ने और केले खाना अधिक पसन्द है।''

शेरसिंह कुछ सोचते हुए चिंतित स्वर में बोले– ''लेकिन मित्रो! बिहार में गन्ने की खेती बहुत कम हो रही है। हमें चिंता है कि यदि यही हालत रही तो हाथी के लिए खाने का संकट पैदा हो जाएगा।

सारे जानवरों ने एक साथ कहा– ''हाँ! बात तो बिल्कुल सही है और अशोक वन के पेड़ों को जड़ से उखाड़ के फेंकने से जंगल भी तो धीरे-धीरे समाप्त होते जाएँगे। तब तो सभी को कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।''

तभी छोटी-सी गिलहरी ने सुझाव दिया– ''मेरे विचार से अशोक वन में गन्ने और पेड़ों की अधिक से अधिक रोपाई करनी चाहिए।''

सबको गिलहरी का यह सुझाव बहुत पसंद आया। सब एक स्वर में बोले– ''तब तो वनदेवी भी खूब प्रसन्न होगी।''

भालू ने बंदर से कहा– ''सुनो! तुम्हारी भी खूबी है कि एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर लम्बी छलांग लगा लेते हो और मीठे-मीठे फलों को तोड़-तोड़कर पेड़ों की डाली पर ही खाने लगते हो।'' सियार ने भी कहा।

तभी भौं-भौं की आवाज करते हुए कुत्ता बोला– ''लेकिन बंदर कुछ फलों को नीचे भी गिराते हैं हमारे लिए।''

शेर सिंह ने सभी की बातों को सुन कर कहा– ''वनदेवी की पूजा और इस महोत्सव के अवसर पर पौधारोपण अति आवश्यक है। तभी तो पर्यावरण भी सुरक्षित रह पाएगा। समय पर वर्षा भी होगी। सभी जीवों की रक्षा हो पाएगी। अब हम लोग अशोक वन में प्रत्येक वर्ष वनदेवी की पूजा और वन महोत्सव धूमधाम से मनाएँगे।''

सभी जानवर शेरसिंह से सहमत होते हुए वनदेवी की जय! कहते हुए हँसते-मुस्कुराते अपने-अपने घरों की ओर चल दिए।

– दरभंगा (बिहार)

पाँच शिशु गीत

– मनोज जैन

गोदी में आ जा मुन्ना

गोदी में आ जा मुन्ना,
चुन्नू के घुंघराले बाल
फूले-फूले प्यारे गाल,
ना रे ना ना रोना ना
मीठा दूध पिलाऊँगी
फिर मैं तुझे घुमाऊँगी
ता क धि ना धि न ना
गोदी में आ जा मुन्ना

मेरी प्यारी मुनिया

मेरी प्यारी मुनिया है,
इसकी न्यारी दुनिया है
बातें करती परियों से,
सपनों में खो जाती है
पल भर में सो जाती है।

चंदा मामा आ जाना

चंदा मामा आ जाना,
परियों को संग में लाना
तब मुन्ना सो जाएगा,
सपनों में खो जाएगा
आ जाना भई आ जाना,
चंदा मामा आ जाना

मेरी गुड़िया रानी

मेरी गुड़िया रानी है,
लगती बड़ी सयानी है
बात बात में मुस्काती
डिम्पल पड़ते गाल में
खुश रहती हर हाल में

मेरा मुन्ना राजदुलारा

मेरा मुन्ना राजदुलारा,
मम्मा की आँखों का तारा
टुक-टुक देखे घड़ी-घड़ी,
आँखें इसकी बड़ी-बड़ी

– भोपाल
(म. प्र.)

अंक उलझन

– संकेत गोस्वामी

खाली दिए गए खानों में सही अंक भरो ताकि उनका जोड़ वही आए जो दाएं और नीचे दिया गया है।

9			5	1		33
	2	7			0	22
5	1	6		1	4	25
	0	5	7	2	3	26
4		1		2		27
4	1	2	8		0	19
34	15	23	41	16	23	

• चौखाने में नहीं लिखा गया अंक 0 से 9 के बीच का एकल अंक ही होगा।

• हर रेखा के कुल अंकों का जोड़ नीचे और दायीं ओर लिखा गया है।

9	7	2	5	1	9
3	2	7	4	6	0
5	1	6	8	1	4
9	0	5	7	2	3
4	4	1	9	2	7
4	1	2	8	4	0

सही उत्तर-

अर्जुन को श्रीकृष्ण का उपदेश

– मोहनलाल जोशी

महाभारत युद्ध प्रारंभ होने वाला था। अर्जुन का रथ श्रीकृष्ण हाँक रहे थे। अर्जुन ने कृष्ण से कहा– ''मेरा रथ दोनों सेनाओं के बीच में लेकर चलो।''

कृष्ण भगवान रथ को सेनाओं के बीच में ले गए। अर्जुन ने देखा– मेरे सामने मेरे गुरु द्रोणाचार्य है। मेरे दादा (पितामह) भीष्म है। सभी कौरव मेरे भाई हैं। और भी मेरे बहुत सारे संबंधी है। मुझे इन सभी का वध करना पड़ेगा। ऐसा राज्य मुझे नहीं चाहिए। उसने अपना धनुष रथ में रख दिया। कृष्ण से कहा– ''मैं युद्ध नहीं करूँगा।''

तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया– ''तुम्हारा काम कर्म करना है। कोई किसी का संबंधी नहीं होता। ये सभी प्राणी मेरे अंश हैं। इनकी मृत्यु नहीं होती। ये सब मेरे में समा जाते हैं। फिर मेरे से ही जन्म लेते हैं।'' कृष्ण ने अपना दिव्य स्वरुप प्रकट किया। फिर अर्जुन युद्ध के लिए तैयार हो गया। ये उपदेश 'गीता' कहलाए। इसमें अठारह अध्याय एवं सात सौ श्लोक हैं।

बाण शैय्या पर भीष्म

भीष्म को इच्छा मृत्यु का वरदान था। वे किसी से मरने वाले नहीं थे। उन्होंने पांडवों की बहुत सेना नष्ट कर दी थी। नवें दिन रात को युधिष्ठिर भीष्म के शिविर में जाते हैं। वे भीष्म से उनके मरने का उपाय पूछते हैं। भीष्म जी कहते हैं– मैं स्त्री पर वार नहीं करता।

दसवें दिन पांडव सेना शिखंडी को आगे रखते हैं। शिखंडी पहले स्त्री था। उसका रूप जानकर भीष्म धनुष रख देते हैं। उस समय अर्जुन भीष्म जी पर अनेक बाण चलाते हैं। भीष्म उसके बाणों को नहीं रोकते। अर्जुन के सारे बाण भीष्म के शरीर में धंस जाते हैं। वे नीचे गिर जाते हैं। उनके शरीर में लगे बाणों से शैय्या बन जाती है। वे बाणों पर ही सो जाते हैं। उनका सिर लटकने लगता है। वे तकिया मंगवाते हैं।

तब अर्जुन दो बाण उनके मस्तक पर मारकर तकिया बना देता है। प्यास लगने पर भीष्म जी पानी माँगते हैं, दुर्योधन सोने के पात्र में जल लाता है। भीष्म जी हँसकर अर्जुन की ओर देखते हैं। अर्जुन अपने बाण से धरती में से बाणगंगा की धारा इस प्रकार प्रकट कर देता है कि वह सीधे भीष्म जी के मुख में गिरती है। भीष्म जी युद्ध समाप्त होने तक अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा करते हैं।

– बाड़मेर (राज.)

ऊँट और सियार

– टीकम चन्दर ढोडरिया

एक बहुत बड़ा रेगिस्तान था। उसमें कई प्रकार के जानवर रहते थे। ऊँट और सियार भी उसमें रहते थे। जैसा कि आप जानते हो ऊँट शाकाहारी होता है। पेड़–पौधों की पत्तियाँ, कंटीली झाड़ियाँ और घास आदि खाता है। उसका शरीर भी लंबा चौड़ा होता है। सियार अवसरवादी होता है। वह माँसाहारी और शाकाहारी दोनों प्रकार का भोजन कर लेता है। छोटे चिंकारा, हिरण, मेंढक, खरगोश आदि का भी आसानी से शिकार कर लेता है। गन्ना उसे विशेष प्रिय है।

एक समय जैसल ऊँट रात भर घर नहीं आया। सुबह सूरज निकलने के कुछ समय पहले, धीरे–धीरे चलते हुए घर पहुँचा। बहुत थका–थका सा लग रहा था। ऐसा प्रायः अब आए दिन होने लगा। दिनभर वह सोता और रात होते ही निकल पड़ता।

एक दिन उसके पिता ने पूछ ही लिया– ''क्या बात है जैसल! तू दिनभर घर में सोता रहता है, रात में घर से गायब रहता है?''

जैसल ने बताया कि सैकू सियार मेरा नया मित्र बना है। मैं उसके साथ पास के गाँव में चला जाता हूँ। वहाँ कई तरह के पेड़ पौधे हैं। उनकी पत्तियाँ मुझे खाने को मिल जाती हैं। बहुत स्वादिष्ट होती हैं। हमारे साथ बहुत सारे सियार होते हैं। उनको भी वहाँ खाने को अच्छा–अच्छा भोजन मिल जाता है।

जैसल के पिता ने उसे समझाया कि मित्रता बराबरीवालों में होती है। सियार शाकाहारी, माँसाहारी दोनों प्रकार का भोजन कर लेता है। हम शाकाहारी हैं। उसका भोजन अलग है हमारा अलग है। शरीर से भी वे हमसे बहुत छोटे होते हैं। उनका हमारा कोई मेल नहीं हैं। वे अवसरवादी होते हैं। कभी भी

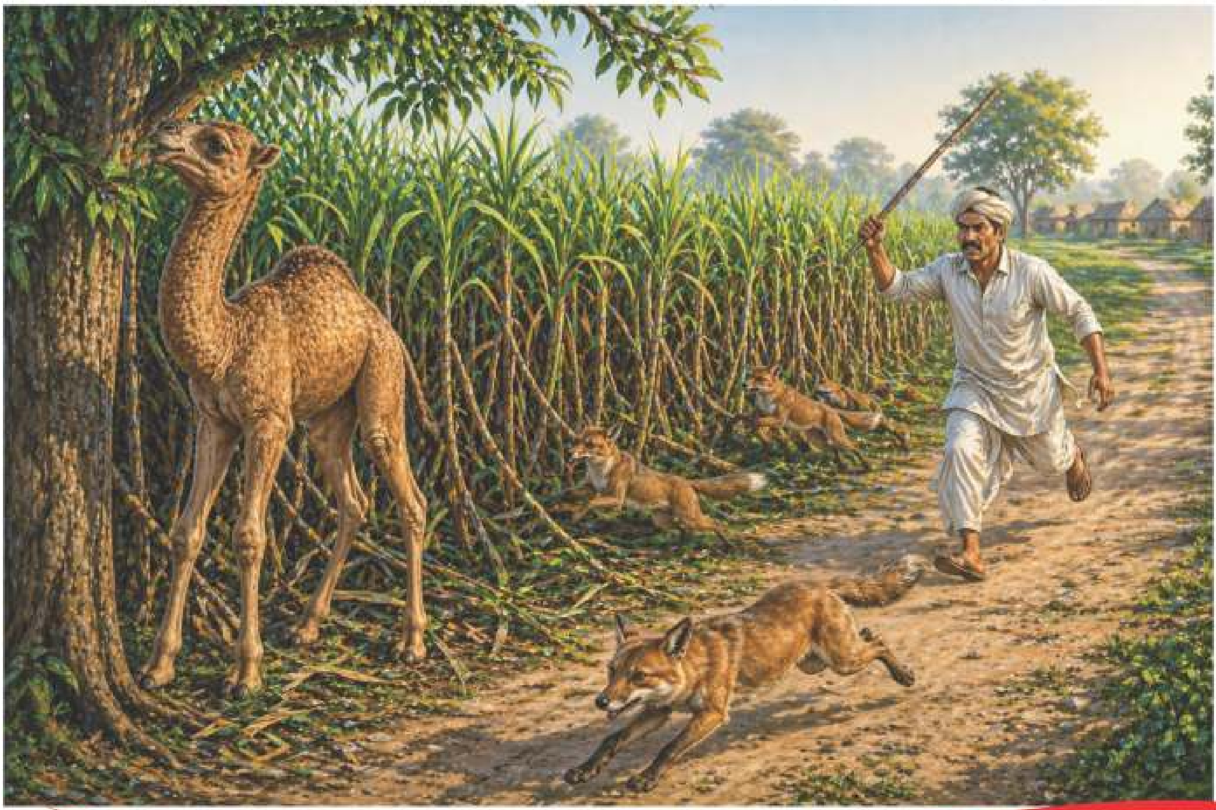

धोखा दे सकते हैं। उनसे मित्रता अच्छी नहीं है। हमें रेगिस्तान में पर्याप्त मात्रा में भोजन मिल जाता है। रात में गाँव जाने की हमें कोई आवश्यकता नहीं है। और फिर रात में भोजन की तलाश में घूमना हमारे स्वभाव में भी नहीं है। सियारों से मित्रता अच्छी नहीं है।

जैसल ने उसके पिता की बात नहीं मानी। उसने सैकू सियार का साथ नहीं छोड़ा।

ऐसे ही एक रात को जैसल ऊँट, सैकू एवं अन्य सियारों के साथ पास के गाँव में चला गया। वहाँ सैकू एवं अन्य सियार एक गन्ने के खेत में चले गए। वे कई दिनों से वहाँ जा रहे थे। जैसल को भी उनके साथ जाना पड़ा। वह वहाँ पेड़ों की पत्तियाँ तोड़-तोड़ कर खाने लगा। सियार गन्ने खाने लगे। जब उनका पेट भर गया तो जैसल सियार जोर-जोर से आवाज निकालने लगा। उसके साथ ही अन्य सियार भी चिल्लाने लगे। उनकी आवाज सुनकर खेत का मालिक लकड़ी लेकर दौड़ता हुआ आया। उसे आता देखकर सब वहाँ से भागने लगे। सियार तो भाग कर खेत से बाहर निकल गए। परन्तु ऊँट कुछ समझ पाता उसके पहले ही खेत का मालिक वहाँ आ गया। लगा उसे लकड़ी से मारने... पीट-पीटकर उसका बुरा हाल कर दिया। सारा क्रोध उसी पर निकाल दिया।

जैसल ऊँट लँगड़ाता-लँगड़ाता घर पहुँचा। वह सैकू सियार से मित्रता कर पछता रहा था।

– बारां (राजस्थान)

प्रसंग

साहस और संवेदना

– मुग्धा पांडे

मशहूर चिंतक, वैज्ञानिक और आविष्कारक बैंजामिन फ्रैंकलिन कम बोलते तथा अधिक काम करते थे। साहस और विश्वास से भरे बैंजामिन कम खर्च में अच्छी कार्यशाला के लिए जाने जाते थे।

एक बार एक कार्यशाला में वह किशोरों के दल को बगीचे में ले गए। ''एक घंटे में यही पर, कुछ नया कर दिखाओ।'' ऐसा कहकर बैंजामिन स्वयं भी उसी स्थान पर सबको देखते हुए आनंद से अपने काम में डूब गए।

एक घंटे बाद सबका काम देखा गया। किसी ने मिट्टी के घर बनाए तो किसी ने बिखरे फूल समेट कर माला पिरो दी। किसी ने बहुत सारी लकड़ियाँ जमा कर दी। तो किसी ने बगीचे के फूलों के नाम पर कविता रच दी।

किन्तु एक किशोर था जिसकी बैंजामिन ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। वह एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ा और वहाँ एक शाखा पर किसी पंछी का लगभग बिखर रहा घोंसला समेटकर सुरक्षित करके वह हौले-हौले से नीचे उतरा।

यह एक कच्चा पेड़ था। ''किन्तु तुमने समग्र प्रयास किया और प्रतिकूल तने पर भी चढ़कर वह घोंसला टूटने से बचाया। तुम बेहतरीन हो।'' बैंजामिन का निरीक्षण भी कमाल का था।

– नई दिल्ली

कविता

नानाजी

– डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

नाना जी ओ! नाना जी।
हँसी-खुशी घर आना जी।।
अम्मा तुम्हें याद करतीं।
उनको दरष दिखाना जी।।
मेरी नटखट मौसी को-
साथ यहाँ पर लाना जी।।
नए खिलौने हम सबको।
मेले में दिलवाना जी।।
दाँत अगर हों टूट गए-
तो रसगुल्ले खाना जी।।
महँगाई की मार पड़े।
तो फिर मत सहलाना जी।।
अपने रूपयों की थैली-
कहीं भूल मत आना जी।।

– हरदोई (उ. प्र.)

कविता

म्याऊँ-म्याऊँ गाती बिल्ली

– महेन्द्र कुमार वर्मा

मेरे घर आती है बिल्ली,
इतराती है बड़ी चिबिल्ली।

दूध चुराते जब पकड़ाए,
उड़ जाती तब उसकी खिल्ली।
जब शिकार करती चूहों का,
म्याऊँ-म्याऊँ गाती बिल्ली।
कभी-कभी जब आलस आता,
हो जाती वो ढिल्लम ढिल्ली।
कभी घूमती काशी मथुरा,
कभी घूमने जाती दिल्ली।
लुका छिपी का खेल-खेल के,
चतुराई दिखलाती बिल्ली।
दबे पाँव आती जाती है,
चौकन्नी मुस्काती बिल्ली।

– भोपाल (म. प्र.)

अभिलाषा

– प्रिया देवांगन 'प्रियू'

पास तनिक माँ मेरे आओ।
गा कर लोरी मुझे सुलाओ।।
नींद नहीं माँ मुझको आती।
तुम मोबाइल में खो जाती।।
अपनी मीठी तान सुनाओ।
गा कर लोरी मुझे सुलाओ।।
वस्त्र तुम्हारे दें ना छाया।
धूप जलाती मेरी काया।।
आँचल का सुख मुझे दिलाओ।
गा कर लोरी मुझे सुलाओ।।
चलचित्रों में हो रम जाती।
मैं रोकूँ तो डाँट लगाती।।
अपनी गोदी मुझे उठाओ।
गा कर लोरी मुझे सुलाओ।।

– गरियाबंद (छ. ग.)

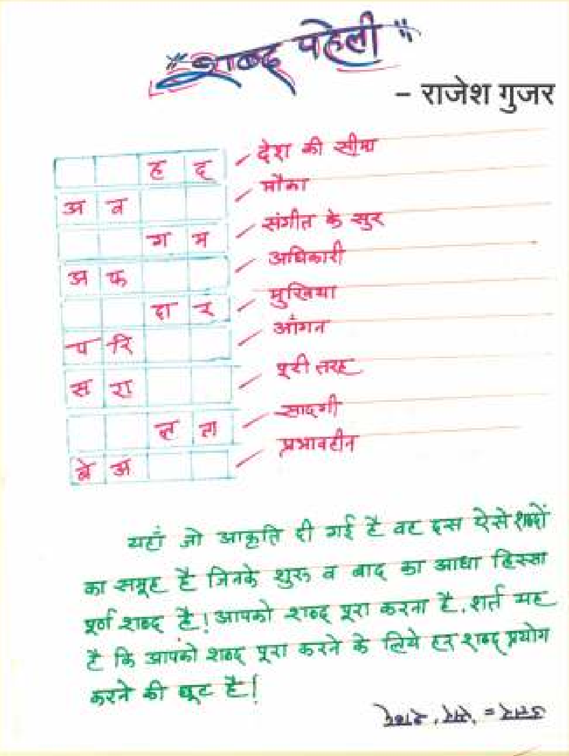

शब्द पहेली

– राजेश गुजर

		ह	द	देश की सीमा
अ	व			मौका
		ग	म	संगीत के सुर
अ	फ			अधिकारी
		दा	र	मुखिया
प	रि			आँगन
स	रा			पूरी तरह
		ल	ता	सादगी
बे	अ			प्रभावहीन

यहाँ जो आकृति दी गई है वह दस ऐसे शब्दों का समूह है जिनके शुरु व बाद का आधा हिस्सा पूर्ण शब्द है। आपको शब्द पूरा करना है, शर्त यह है कि आपको शब्द पूरा करने के लिये हर शब्द प्रयोग करने की छूट है।

इस तरह बनाओ

– संकेत गोस्वामी

हिरण

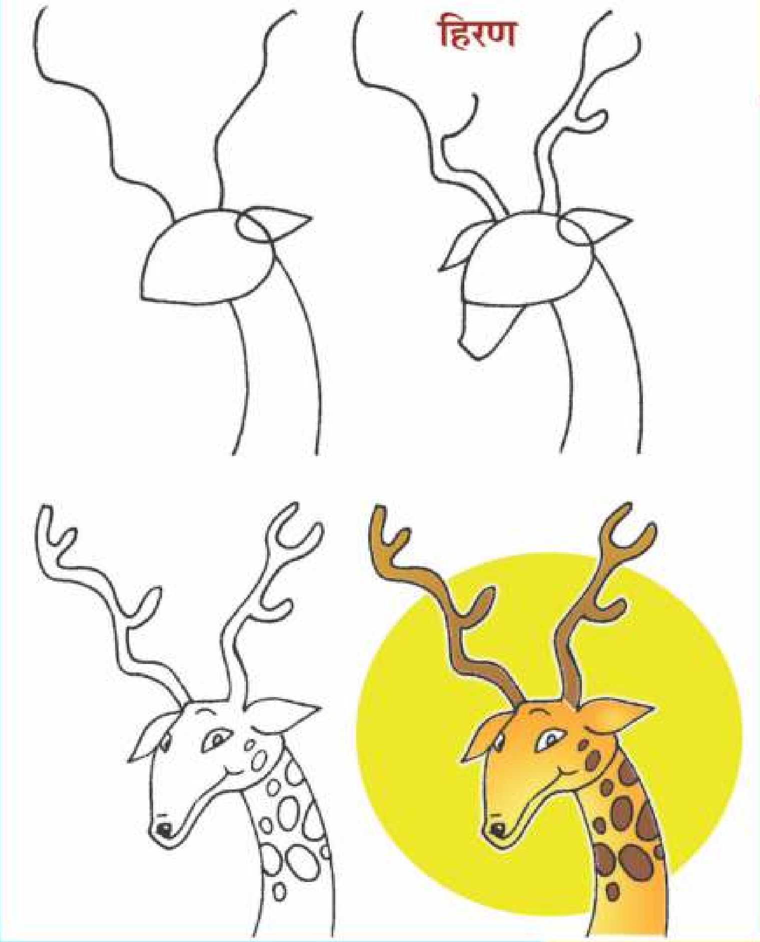

अभ्यास करो और
एक ही रेखा से
पेंगुइन का
चित्र बनालो

चौखानों की मदद से कोआला का चित्र हूबहू बनाओ

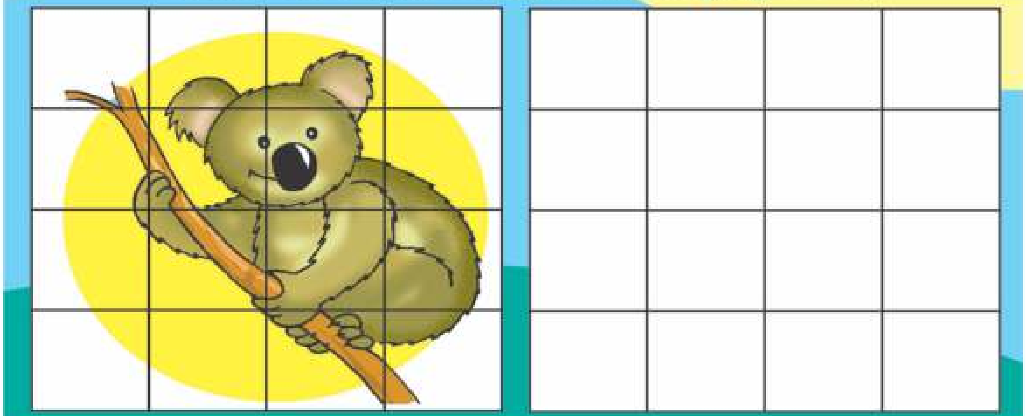

छः अँगुल मुस्कान

काफी देर बाद बस आयी और लोगों की भीड़ में आपा धापी मच गई। एक व्यक्ति अपने आगे खड़े गंजे व्यक्ति से टकराया तो वह चीखा– 'मेरे सिर पर चढ़ना है क्या ?'

'नहीं, वहाँ से तो मैं फिसल कर गिर पड़ूँगा,' उसने गंजे सिर की ओर देखते हुए कहा।

*****

कॉलेज में एन.सी.सी. की परेड करायी जा रही थी। प्राचार्य महोदय उसका निरीक्षण एक प्रोफेसर के साथ कर रहे थे। एक कैडेट को बार–बार अपना पैंट ऊपर खींचते देख वे प्रोफेसर से बोले– 'उस छात्र के व्यवहार से सभी छात्र मुस्करा रहे हैं। उसे पैंट खींचने से रोकें।'

प्रोफेसर–श्रीमान, यदि उसे पैंट खींचने से रोक देंगे तो सभी छात्र मुस्कराने की जगह ठहाका लगाने लगेंगे।

*****

मनोविज्ञान के प्रोफेसर–नीतू, तुम बताओ, इस कक्षा में सबसे बुद्धिमान लड़की कौन है ?

नीतू–श्रीमान मीना है।

प्रोफेसर–कैसे ?

नीतू– वह कक्षा में चुपके–चुपके मोबाइल पर बातें करती है फिर भी किसी शिक्षक ने एक बार भी नहीं पकड़ा।

*****

एक दिन मंत्री जी ने अपने सचिव को खूब डाँट लगाई– 'मेरे भाषण में इतने कठिन शब्द मत लिखा करो, क्योंकि मुझे ही पता नहीं होता कि मैं क्या बोल रहा हूँ।'

*****

चौधरी साहब ने पहली बार कार खरीदी और गाँव से शहर घूमने चले। गाँव के चौराहे पर ड्रायवर को बाहर हाथ निकालते हुए देखकर वे झल्लाये– 'तुम कार चलाते रहो जब बारिश आएगी तो मैं तुम्हें बता दूँगा।'

*****

मुँहासों के दाग मिटाने के लिए एक युवती ने ब्यूटी पार्लर में अपना चेहरा दिखाया। सौन्दर्य विशेषज्ञ ने बताया वह दाग मिटाने के लिए एक हजार रुपया लेगी।

'सस्ते में नहीं होगा', युवती ने पूछा। सौन्दर्य विशेषज्ञ ने कहा, 'आप घूंघट निकालना शुरू कर दीजिए।'

–

पुस्तक परिचय

जम्बो पैकेट

मूल्य– ४९९/–

बाल साहित्य में लघुकथाओं में अभी बहुत लेखन नहीं हुआ है। श्री. राममूरत 'राही' जी की इस कृति में इसी कमी को पूर्ति करने का एक सार्थक प्रयत्न है।

प्रकाशक– स्वतंत्र प्रकाशन प्रायवेट लिमिटेड, स्वतंत्र प्रकाशन भवन, ए–२६/ए, पहली मंजिल, पाण्डव नगर, दिल्ली–११००९२

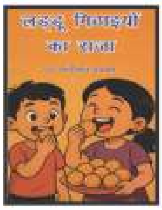

लड्डू मिठाइयों का राजा

मूल्य– १९५/–

ऐसा कौन बच्चा होगा जिसे मिठाई न भाती हो, बच्चे बड़े भी मिठाइयों पर ललचाते हैं। डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल ने इस कृति में केवल मिठाइयों पर ही सरसता से कलम चलाई है। आनंद ले उनकी रसभरी सचित्र कविताओं का।

प्रकाशक– उमंग प्रकाशन

ए–३१–सी, न्यू गुप्ता कॉलोनी, दिल्ली–११०००९

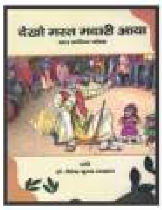

देखो मस्त मदारी आया

मूल्य– १६१/–

डॉ. वीरेन्द्र कुमार भारद्वाज की इस कृति में आप बच्चों के लिए २९ सुरुचिकर बाल कविताएँ है। जिन्हें पढ़कर आप आनंद अनुभव करेंगे।

प्रकाशक– पाठक प्रकाशन

शेखपुरा खजूरी, नौबतपुर, पटना–८०११०९ (बिहार)

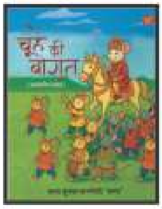

चूहे की बारात

मूल्य– १९९/–

यह श्री. संतकुमार बाजपेयी 'सन्त' की मनमोहक २८ बाल कविताओं का रोचक संकलन है। सुन्दर रेखा चित्रों से सज्जित यह एक मनोहर कृति है।

प्रकाशन– श्वेतवर्णा प्रकाशन, २१२–ए, एक्सप्रेस न्यू अपार्टमेंट, सुपर एमआयजी, सेक्टर–९३, नोएडा–२०१३०४ (उ. प्र.)

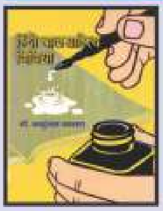

हिंदी बाल साहित्य विविधा

मूल्य– ३५०/–

डॉ. शकुंतला कालरा बाल साहित्य जगत की स्वनामधन्य समालोचक एवं रचनाकार हैं। बाल साहित्य की विविध विधाओं पर आपका यह एक बहुमूल्य शोध ग्रन्थ है। जो बाल साहित्य अध्येताओं को तथ्यात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

प्रकाशन–वनिका पब्लिकेशन, एन–ए–१६८, गली नं.–६, विष्णु गार्डन, नई दिल्ली–११००१८

भारी धूप

– पवन पहाड़िया

जब होती है बेजा सर्दी सबको लगती प्यारी धूप।
पर जब पारा हो गर्मी का लगने लगती खारी धूप।।
वर्षा आती तब छिप जाती
ढूँढ़े से भी ना मिल पाती
और कोहरा जब छाता है
पता नहीं क्यूं यूं थर्राती
दम क्यूं तेरा निकले जाता क्या यह तुमसे भारी धूप।
सारे कहते बहुत निडर हो
पर लगता वे सब झूठे हैं
या कह दो ना पटरी खाती
इसीलिए इनसे रूठे हैं
झूठ बोलना बहुत बुरा है सच–सच कह दो सारी धूप।
तुम जब तपती सब अकुलाते
ना आती तो भी थर्राते
कैसी तेरी ये माया है
समझ नहीं हम बच्चे पाते
ढूंढत–ढूंढत राज तुम्हारा अकल गई है मारी धूप।
दादी कहती तुम दुनिया को
ऊर्जा देती रहती हो
मौसम के अनुरूप रूप धर
नैया खेती रहती हो
क्या यह सच है समय चक्र की युगों–युगों से यारी धूप।

– नागौर
(राजस्थान)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०५/२०२६ प्रेषण तिथि ३०/०५/२०२६ प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

देवपुत्र का सदस्यता शुल्क है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता ३००/- १० वर्षीय सदस्यता ५०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १८०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइए

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : **www.devputra.com**

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी